स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

आज़ादी का अमृत महोत्सव

एन एस सी
NSC
(An ISO 9001 : 14001 Certified Company)

ई-बीज पत्रिका
E-BEEJ PATRIKA

छमाही ई–पत्रिका · जनवरी – जून, 2022 · प्रथम अंक

एनएससी – किसानों की समृद्धि के लिए प्रयासरत

निदेशक मंडल
Board of Directors

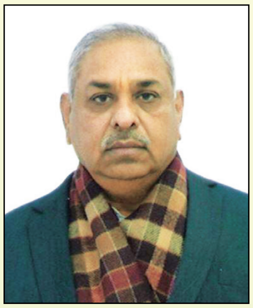

श्री अश्वनी कुमार
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Sh. Ashwani Kumar
Chairman and Managing Director

श्रीमती शुभा ठाकुर
सरकारी निदेशक
Ms. Shubha Thakur
Government Director

श्रीमती एस. रूकमणि
सरकारी निदेशक
Ms. S. Rukmani
Government Director

श्री वि. मोहन
निदेशक (वित्त)
Sh. V. Mohan
Director (Finance)

डॉ. कृष्ण चन्द्र साहू
निदेशक (वाणिज्यक)
Dr. Krushna Chandra Sahoo
Director (Commerical)

डॉ सुधीर मोहनराव कोकरे
स्वतंत्र निदेशक
Dr. Sudhir Mohanrao Kokare
Independent Director

श्रीमती अर्चना मिश्रा
स्वतंत्र निदेशक
Ms. Archna Mishra
Independent Director

मुख्य संरक्षक
श्री अश्वनी कुमार
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री वि. मोहन
निदेशक (वित्त)
डॉ. कृष्ण चन्द्र साहू
निदेशक (वाणिज्यक)

मुख्य संपादक
श्री संजय कुमार मेहता
महा प्रबंधक (वित्त एवं कल्याण)

संपादक
श्रीमती दीपिका रानी
प्रबंधक (राजभाषा)

उप संपादक
श्री आनंद कुमार रावत
लेखा अधिकारी (वित्त एवं लेखा)

तकनीकी संपादक
श्री चेतन चौहान
प्रोग्रामर (सूचना तकनीकी)

विशेष सहयोग
श्री भगीरथ सिंह रावत
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
एवं
श्री हरिश्चन्द्र पोद्धार
सहायक (प्रचार)

प्रकाशक
राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम–''मिनी रत्न'' कम्पनी)
बीज भवन, पूसा परिसर, नई दिल्ली– 110012
दूरभाष: 25846292, 25846295
ई–मेल: nsc@indiaseeds.com
वेबसाईट: www.indiaseeds.com

विषय सूची

- अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से — 4
- सम्पादकीय — 5
- बूंद–बूंद सिंचाई से गन्ने की उन्नत खेती — 6
- अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं निदेशक (वाणिज्यिक) का निगम मुख्यालय में स्वागत/क्षेत्रीय प्रबंधक सम्मेलन की झलकियां — 10
- लोम सकल व्याधिन कर मूला — 11
- हिन्दी भाषा के प्रयोग की चुनौतियां और संभावनाएं — 12
- विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) — 14
- बुढापा एक वरदान — 15
- प्रदर्शनियों/मेलों की झलकियां — 16
- हरित क्रांति — 17
- अब्राहम लिंकन — 23
- आठवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून, 2022) की झलकियां
- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (08 मार्च, 2022) की झलकियां — 31
- निगम मुख्यालय के स्थापना दिवस की झलकियां
- क्योंकि मैं एक बीज हूँ — 32
- बादल की पुकार/गीत–बीज पर — 33
- सहायता — 34
- स्वास्थ्य और व्यायाम — 35
- क्षेत्रीय कार्यालयों/फार्मों पर प्रयुक्त होने वाली मशीनों एवं गोदामों की झलकियां — 36
- ज्ञान गंगा — 37
- गुणकारी घरेलू औषधियॉं — 38
- जनवरी – जून, 2022 तक सेवानिवृत्तियॉं — 41
- प्रशासनिक शब्दावली — 42
- नेमी टिप्पणियॉं/(ROUTINE NOTES) (1 से 60 तक ...) — 43
- राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम 2022–23 — 45
- क्षेत्रीय प्रबन्धकों/फार्म प्रमुखों के पतों की सूची — 47

बीज पत्रिका में प्रकाशित लेख, लेखकों के अपने विचार हैं, यह आवश्यक नहीं कि रा.बी.नि.लि. उससे सहमत हो। अत: पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए रा.बी.नि.लि. किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से

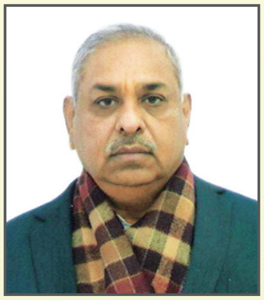

राष्ट्रीय बीज निगम में मैंने 01 जून, 2022 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का प्रभार ग्रहण किया। मेरे कार्यकाल के दौरान मेरी यह अपेक्षा रहेगी कि एनएससी की गति में वृद्धि हो तथा वर्ष 2022–23 में एनएससी के बीजों की बिक्री कम से कम रू. 1500/– करोड़ की हो। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए मैं मुख्यालय सहित सभी क्षेत्रीय प्रबंधकों/फार्म प्रमुखों से नियमित रूप के बैठकें कर रहा हूँ और जो भी दिशानिर्देश बिक्री को बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं, उन पर तुरंत कार्रवाई करने हेतु निर्देश दिए जा रहे हैं और मेरी यह भी कोशिश रहेगी कि एनएससी के जो भी भुगतान, केंद्र सरकार/ राज्य सरकार के पास लंबित है उनका भी समाधान शीघ्रातिशीघ्र किया जाए। इस दिशा में मैं, केंद्र/राज्य सरकारों के संबंधित अधिकारियों एवं एनएससी के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ समन्वयक बैठकों के माध्यम से समाधान का मार्ग प्रशस्त कर रहा हूँ।

भारत सरकार के मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के पशुपालन एवं डेयरी विभाग द्वारा पशुओं के टीकाकरण के लिए एनएससी को प्रोग्राम लॉजिस्टिक एंजेसी के रूप में कार्य करने हेतु 26.05.2022 को नियुक्त किया गया, जिसमें एनएससी पशुपालन एवं डेयरी विभाग द्वारा पशुधन स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण योजना के तहत देश के सभी राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेशों में पशुओं के टीकाकरण (Brucellosis, FMD, PPR & CSF Vaccines) ईयर टैग एवं एप्लीकेटर्स के क्रय व आपूर्ति का कार्य देखेगें। इस कार्य के तहत एनएससी को वर्ष 2022–23 में लगभग 1500 करोड़ का व्यवसाय मिल रहा है जिस पर राष्ट्रीय बीज निगम को लगभग रू. 08 करोड़ की राशि सर्विस चार्ज के रूप में प्राप्त होगी।

उपर्युक्त दोनों गतिविधियों के द्वारा वर्ष 2022–23 में एनएससी की बिक्री रू. 2500/– करोड़ करने के लक्ष्य के साथ ही सभी कार्मिकों से अपनी अधिकतम कार्यक्षमता से अपना–अपना अधिकतम योगदान करने की अपेक्षा है।

एनएससी ने पिछले योग दिवस के दौरान मुख्यालय सहित सभी क्षेत्रीय कार्यालयों/फार्मों में बड़े पैमाने पर योग दिवस की गतिविधियों का आयोजन किया और इस अवसर पर मैंने सभी कार्मिकों में एक उमंग एवं उत्साह का वातावरण देखा जोकि एनएससी के भविष्य के लिए अति उत्तम है जिसकी कुछ झलकियां ई–बीज पत्रिका में देखी जा सकती हैं।

मैं एनएससी के सभी कार्मिकों की कैपेसिटी बिल्डिंग की दिशा में भी एक बड़ा कदम लेने पर विचार कर रहा हूँ ताकि सभी तकनीकी एवं गैर तकनीकी कार्मिकों की कार्य क्षमता को बढ़ाया जा सके। इस दिशा में माह जून, 2022 को मुख्यालय में, बीज की गुणवत्ता को और अधिक बढ़ाने के लिए आईएसओ : 9001 व 14001 पर 10 दिनों का कैपेसिटी बिल्डिंग (capacity building) कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें सभी क्षेत्रीय कार्यालयों व फार्मों से एक–एक कर्मचारी ने भाग लिया।

मैं आशा करता हूँ कि यह ई–पत्रिका निगम के कार्यकलापों को सभी कर्मचारियों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी तथा इसका वितरण सभी क्षेत्रीय कार्यालयों/फार्मों के द्वारा वहां के किसानों तक किया जा सकेगा। इस प्रकार सभी कर्मचारी एवं देश के किसान लाभान्वित हो सकेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

(अश्वनी कुमार)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

सम्पादकीय

राष्ट्रीय बीज निगम (एनएससी) अपनी छमाही गृह पत्रिका "बीज पत्रिका" का प्रकाशन पिछले कुछ वर्षों से कर रहा है। परंतु कोविड–19 के दौरान, इस महामारी की स्थिति को मद्देनजर रखते हुए बीज पत्रिका के प्रकाशन के कार्य को स्थगित कर दिया गया था और अब एनएससी ने ई–बीज पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया है। मुझे बहुत हर्ष हो रहा है कि एनएससी की प्रथम ई–बीज पत्रिका का संपादन मेरे द्वारा किया जा रहा है।

मुझे यह सूचित करते हुए खुशी हो रही है कि अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक/मुख्य संरक्षक के रूप में श्री अश्वनी कुमार जी का मार्गदर्शन एनएससी को प्राप्त हो रहा है, जिनका कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के तकनीकी एवं प्रशासनिक कार्यों का अनुभव है, जिसका लाभ एनएससी को अवश्य मिलेगा। उनके कार्यभार ग्रहण करने के बाद उनके अथक प्रसासों से एनएससी के कलेक्शन में सुधार हुआ है। इसके अलावा, निगम में निदेशक (वाणिज्यिक) के रूप में डॉ कृष्ण चन्द्र साहू ने 02 मई, 2022 को अपना कार्यभार संभाला तथा उनके कुशल मार्गदर्शन में एनएससी के उत्पादन व विपणन की गतिविधियों में वृद्धि हुई है। उनकी पहल से, एनएससी में कोविड–19 के बाद प्रथम क्षेत्रीय प्रबंधक सम्मेलन (आरएमसी) दिनांक 28–29 मई, 2022 को मुख्यालय में आयोजित किया गया जिसकी कुछ झलकियां इस ई–बीज पत्रिका में दर्शाई गई हैं। इसके अतिरिक्त, एनएससी की प्रमुख गतिविधियां जैसे– महिला दिवस, योग दिवस एवं अन्य गतिविधियों के संबंध में ई–बीज पत्रिका के माध्यम से आप सभी को महत्वपूर्ण सूचना प्रदान की जा रही है।

हमारा प्रयास है कि ई–बीज पत्रिका के माध्यम से कृषि एवं एनएससी से संबंधी जानकारियों/गतिविधियों को पाठकों को प्रदान किया जाएं तथा हमारी यह अपेक्षा है कि यह एनएससी के सभी कार्मिकों के साथ–साथ एनएससी से जुड़े सभी किसानों एवं विक्रेताओं को सभी प्रक्षेत्र कार्यालयों/क्षेत्रीय कार्यालयों/फार्मो के माध्यम से वितरित किया जाए ताकि एनएससी की गतिविधियों का अधिक से अधिक प्रचार–प्रसार किसानों के बीच किया जा सके और ई–बीज पत्रिका का वितरण अब सिर्फ मुख्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों तक न समिति रहकर देश के सभी गांवों तक होगा ऐसी मेरी अपेक्षा है।

मैं पाठकों के लेखों एवं सुझावों का भी स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि ई–बीज पत्रिका राजभाषा हिंदी के उत्थान में भी भरपूर योगदान देने में समर्थ होगी। मैं इस कार्य के लिए आप सभी का सहयोग चाहता हूँ। पाठकों से पुनः निवेदन है कि तकनीकी एवं अन्य रोचक विषयों पर अपने लेख अधिक से अधिक मात्रा में प्रदान करें ताकि ई–बीज पत्रिका को अधिक रोचक एवं ज्ञानवर्धक बनाया जा सके।

(संजय कुमार मेहता)
महा प्रबंधक (वित्त/कल्याण)

बूंद–बूंद सिंचाई से गन्ने की उन्नत खेती

भारत विश्व में गन्ना एवं चीनी के उत्पादन में प्रथम है। यहा चीनी उद्योग लगभग 20,000 करोड़ का है। लगभग 3.5 करोड़ कृषक गन्ने की खेती से जुड़े हैं, हांलाकि भारत में गन्ना 4.09 मिलियन है, क्षेत्र में उगाया जाता है जिसकी पैदावार लगभग 283 मिलियन टन है, जबकि औसत पैदावार केवल 69 टन प्रति है जो कि कृषकों द्वारा परम्परागत कृषि क्रियाओं एवं सिंचाई पद्धति के कारण है। सदियों से गन्ना की फसल एक नकदी फसल के रूप में ली जाती रही है। इसका क्षेत्र बहुत अधिक बढ़ सकता है, साथ में उत्पादकता भी बढ़ाई जा सकती है। जबकि हम परम्परागत बहाव पद्धति की बजाय बूंद–बूंद सिंचाई पद्धति का प्रयोग करते हुए न केवल जल का पर्याप्त एवं संतुलित उपयोग करें बल्कि गन्ने की कार्यिकी व्यवस्था के आधार पर ड्रिप के साथ में उर्वरकों का प्रतिदिन संतुलित प्रयोग करते हुए अधिक से अधिक उत्पादन एवं अधिक आर्थिक लाभ लें सकते हैं।

जलवायुः– भारत में गन्ना 8°N से 3°N अक्षाशों के मध्य होता है। देश में गन्ने की खेती के लिये दो क्षेत्र मान्य हैं। उष्ण कटिबंधीय दक्षिण विन्ध्य क्षेत्र गन्ने की खेती के लिये उत्तम एवं उपोष्ण उत्तर विन्ध्य क्षेत्र की जलवायु गन्ने की वृद्धि के लिये कुछ कठोर है। उत्तरी उपोष्ण क्षेत्र में गर्मियां, उच्च तापमान तथा सर्दियों में कम तापमान 12 महीनों जैसे 6–7 महीने गन्ने की वृद्धि को कुछ रोकता है। गन्ने में पकते समय औसत न्यूनतम तापमान 14–18°C, आर्द्रता 50–60 प्रतिशत और दिन का औसत तापमान 22–26°C यदि हो तो शूगर प्रतिशत ज्यादा होता है।

मिट्टीः– गन्ने की खेती के लिये दोमट मिट्टी अच्छी रहती है। खेत में मिट्टी पलटने वाले हल से जोतकर डिस्क हैरो लगभग तीन बार चलाकर मिट्टी को भुरभुरी बनायें तथा जल निकास अच्छा हों।

ड्रिप सिंचाई खेत की तैयारीः– गन्ने की जड़ें रेशेदार एवं तन्तुयुक्त होती हैं तथा 30–60 सेमी गहराई तक बहुत सक्रिय रहती हैं। गन्ने के खेत में जिसमें ड्रिप लगाते हैं वहां की मिट्टी की भौतिक दशा अच्छी होनी चाहिए जिससे मिट्टी के कणों के मध्य केशिकत्व के द्वारा पानी आसानी से जड़ों द्वारा लिया जा सके। ड्रिप

वाले खेत में उर्वरक उपयोग क्षमता बढ़ाने के लिये 25–30 सेमी. गहरी जुताई करें। गन्ने के खेत में पूर्ण संपेक्षित मिट्टी होने पर मृदा सरन्ध्रता, गन्ने का अंकुरण, टीलरिंग व उंचाई अच्छी प्राप्त होती है।

किस्में– शीघ्र पकने वाली :– (राजस्थान हेतु) को 29, को 997, को 527, को 6617

मध्यम व देरी से पकने वाली:– (राजस्थान हेतु) को. 1253, को. 419, को 1007, कोजे 111, को 449, को 527

बीजोपचार:– सेट ऐसा हो जिसमें 2–3 कलिका हो तथा प्रति हेक्टर लगभग 2500 सेट की आवश्यकता पड़ती है। सेट या बीज को 0.1 प्रतिशत कार्बोन्डाजिम में 20 मिनट डूबोकर प्रयोग करने से फफूंदी रोग कम होते हैं। स्केल कीटों की रोकथाम के लिये डाइमिथोएट 265 मिली./100 के हिसाब से बीजोपचार करें।

ड्रिप सिस्टम से गन्ने की जड़ के क्षेत्र में उपयुक्त मात्रा में पानी रखा जा सकता है जिससे न तो पानी की अधिकता और न कमी रहे। गन्ने की जलमांग स्थान, अवस्था, मिट्टी एवं जलवायु कारकों पर निर्भर करती है। गन्ने में 01 टन शुष्क पदार्थ प्राप्त करने के लिये 250 टन जल की आवश्यकता पड़ती है। गन्ने की जलमांग लगभग 250–300 सेमी तक है। यह देखा गया है कि हल्की पंप बार बार सिंचाई, ज्यादा एवं कुछ देर बाद से श्रेष्ठ रहती है। गन्ने की सिंचाई के लिये साधारणतया चार पद्धतियां उपयोग में लाई जा रही हैं। इसमें सतही नाली विधि, स्प्रिंकलर सिंचाई, अधोसतही विधि एवं ड्रिप पद्धति। इनमें से ड्रिप पद्धति सर्वश्रेष्ठ है।

ड्रिप सिंचाई पद्धति में इरीगेशन शिडयूल:– ड्रिप पद्धति में प्रतिदिन जलमांग के आधार पर सिंचाई की जाती है। प्रथम सिंचाई मृदा को क्षेत्र क्षमता में लाने के लिये 24–28 घंटे अच्छे अंकुरण के लिये की जाती है।

जल मांग (लीटर प्रति मीटर)

माह	लैटरल से लैटरल की दूरी						
	1.8 मी.	2.0 मी.	2.4 मी.		1.8 मी.	2.0 मी.	2.4 मी.
जनवरी	4	4.5	5.0	जुलाई	6	7.0	8.0
फरवरी	6	7.0	8	अगस्त	6	8.0	9.0
मार्च	8	9.0	10	सितम्बर	9	10.5	12.0
अप्रैल	10	11.5	13	अक्टूबर	11	13	15.0
मई	12	13	15	नवम्बर	11	13	15.0
जून	8	9	10	दिसम्बर	10	12	15.0

आटम अक्टूबर/नवम्बर प्लांटिंग (लीटर प्रति मीटर)

माह	लैटरल से लैटरल की दूरी						
	1.8 मी.	2.1 मी.	2.4 मी.		1.8 मी.	2.1 मी.	2.4 मी.
अक्टूबर	4	5	5	अप्रैल	12	14	20
नवम्बर	5	6	8	मई	14	16	20
दिसम्बर	5	6	8	जून	12	14	16
जनवरी	8	8	10	जुलाई	10	12	14
फरवरी	8	10	12	अगस्त	10	12	14
मार्च	10	12	16	सितम्बर	12	14	16

फर्टीगेशन शिडयूल:– बुवाई से पूर्व 20–30 गाड़ी गोबर की खाद प्रति हेक्टर डालें तथा 01 मिलियन टन नीम केक भी डालें। लैटरल को 0.75–0.90 मी. चौड़ाई की मेड़ बनाकर उसके ऊपर रखें। फर्टीगेशन पानी में घुलनशील उर्वरकों को कम से कम ह्रास करते हुए पौधों की कार्यिकी अवस्था के अनुसार संतुलित मात्रा में प्रतिदिन देने की उत्तम विधि है। इस विधि में पोषक तत्वों का नुकसान बहुत कम होता है साथ ही पोषक तत्व स्वांगीकरणीय अवस्था में रहते हैं तथा उर्वरक ग्रोडों में क्लोराइड़ एवं सोडियम साल्ट नहीं होने से जड़ों को नुकसान भी नहीं पहुंचाते हैं। इससे लगभग 30 प्रतिशत उर्वरक उपयोग क्षमता भी बढ़ती है। सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे बोरान, मैग्नीज, जिंक एवं आयरन इत्यादि भी ड्रिप के माध्यम से आसानी से दिये जा सकते हैं। नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश :: 100:45:45 किग्रा. प्रति एकड़ देने के लिये गन्ने की कार्यिकी एवं विकास अवस्था के अनुसार संतुलित मात्रा में निम्न प्रकार से प्रतिदिन दे सकते हैं:–

समय	उर्वरक ग्रेड	प्रति एकड़ किग्रा. में	प्रतिदिन/ एकड़ में किग्रा
15–60	19:19:19	60	1.33
	यूरिया	84	1.86
61–170	19:19:19	60	0.550
	12:61:0	37	0.330
	यूरिया	20	0.183
171–250	13:0:46	49	0.620
	यूरिया	15	0.189

किलेटेड सूक्ष्म पोषक तत्वों का 7.5 ग्राम प्रति 15 लीटर पानी के हिसाब से पर्णीय छिड़काव भी किया जा सकता है।

खरपतवार नियंत्रण:– गन्ने की फसल लगभग 100 से 120 दिनों तक खरपतवारों से प्रभावित रहता है। 120 दिन के बाद गन्ने की बढ़वार अच्छी होने पर पर्याप्त सूर्य के प्रकाश के अभाव में खरपतवार नहीं पनपता है। ड्रिप सिंचाई पद्धति में खरपतवार अपेक्षाकृत कम रहते हैं। 5 किग्रा. एल्ट्राटाफ प्रति 1000 मीटर पानी में प्रति हेक्टर बुबाई के 4–5 दिन बाद प्रयोग करें तो खरपतवार कम होते हैं।

कीट एवं रोग नियंत्रण:–

अवस्था	कीट	प्रबंधन
बुबाई पूर्व	दीमक	गहरी जुताई करें, उत्तम बीज का प्रयोग करें, बाबिस्टीन 02ग्राम/किग्रा एवं मेलाथियान 02 एम. एल./ली. से बीजोपचार करें।
30–45 दिन	छेंदक कीट	फोरेट 20–25 किग्रा/हे., इण्डोसल्फान 01 ली./हे. छिड़काव, निचली पत्तियां निकालें, कीट ग्रस्त पौधे नष्ट कर दें।
90 दिन	पपड़ी/ चांपा पायरिल्ला	मैलाथियान 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करें। अंड़ों के समूह वाली पतियां नष्ट करें, मैलाथियान या इण्डोसल्फान 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करें।
120 दिन	शीर्ष तना छेंदक	जैविक कीट नियंत्रण ट्राइकोग्रामा का प्रयोग करें।
150 दिन	एफिड़	इमिडाक्लोप्रिड़ 200 एम. एल. प्रति हेक्टर।

ड्रिप सिंचाई पद्धति में आर्दता कम होने के कारण रोगों का प्रकोप भी कम होता है।

रोग	लक्षण	प्रबंधन
कंडवा	रोगी पौधे के सिर से चाबुक आकार की संरचना निकलती है जिसमें काले रंग का चूर्ण होता है। यह फफूंद से फैलता है। मई से जुलाई तक एवं अक्टूबर से दिसम्बर तक ज्यादा नुकसान पहुंचाता है।	• गर्म नम वाष्प उपचारित गन्ने बीज प्रयोग करें। • विटाबेक्स 01 ग्रा/ली. पानी से बीजोपचार। • रोगी पौधे को नष्ट करें। • उन्नत व रोगरोधी किस्मों का प्रयोग करें। • फसल चक्र अपनायें। • 7.5 किलो ट्राइकोडर्मा विरीडी कम्पोस्ट के साथ मिलाकर बुबाई से पूर्व डालें। • जल निकास अच्छा हो, फसल चक्र। • खड़ी फसल में फफूंद रोग दिखने पर 02 ग्राम बाविस्टीन/ली. का छिड़काव भी कर सकते हैं।
लाल सड़न	पौधे का सिरा सूखने लगता है, मध्य शिरा पर लाल धब्बे दिखाई देते हैं। वर्षा ऋतु के प्रारंभ में दिखाई देते हैं।	
उकठा रोग	पत्तियां मुरझाना, पीली पड़ना, पूरा गन्ना सूखकर खोखला होना, वर्षा ऋतु के बाद दिसम्बर तक दिखाई देता है।	
ग्रासी शूट	फसल में ढेर सारे पतले किल्ले निकलना पौधा घास के झूण्ड जैसा दिखता है।	

परम्परागत सिंचाई	ड्रिप सिंचाई
• सिंचाई क्षमता 35–50 प्रतिशत तक ही होती है एवं बार–बार या प्रतिदिन उचित सिंचाई नमी न होने से उत्पादन कम। • नाली पद्धति से पानी ज्यादा उड़ने से गन्ने की जल मांग बढ़ती है एवं पानी का अपव्यय होता है। • नाली सिंचाई पद्धति में सभी पौधों को एक समान पानी नहीं मिल पाता है। • बुबाई पंक्ति में नहीं हो पाने से जुताई एवं अन्य कृषि क्रियाओं में अधिक ईंधन एवं मजदूरी लगती है। • अधिक पम्प हैड लगने से अधिक ऊर्जा का प्रयोग करना पड़ता है। • एक सिंचाई श्रोत से अपेक्षाकृत कम क्षेत्र को सिंचित कर पाते हैं। • गन्ने की जड़ क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी पानी जाने से खरपतवारों को उगने के लिये पानी मिल जाता है। • Runoff & Deep Percolation से पानी का अपव्यय होता है तथा पोषक तत्वों की लीचिंग भी होती है। • कम उत्पादन कम आर्थिक लाभ।	• सिंचाई क्षमता 85 प्रतिशत होने एवं प्रतिदिन उचित सिंचाई से उत्पादन अधिक। • ड्रिप से सिंचित गन्ने से 15 प्रतिशत कम पानी उड़ता है जिससे जल मांग कम होने से भी पानी बचत होती है। • ड्रिप पद्धति में एक लैटरल गन्ने को दो पंक्तियों को सर्व करती हैं एवं सभी पौधों को लगभग एक समान एवं संतुलित पानी सीधे जड़ क्षेत्र में दिया जाता है। • ड्रिप पद्धति में गन्ना सीधी पंक्ति में होने से जुताई कार्य कम ईंधन एवं कम मजदूरी से हो पाता है। • कम पम्प हैण्ड़ दाब पर ड्रिप चलाने से ऊर्जा की बचत होती है। • एक सिंचाई श्रोत से अपेक्षाकृत अधिक क्षेत्र को सिंचित किया जा सकता है। • सिंचाई जल फिल्टर होने से खरपतवार के बीज सिंचाई में नहीं जा पाते एवं गन्ने के जड़ क्षेत्र में ही पानी रहने से भी खरपतवार कम उगते हैं। • Runoff & Percolation से पानी का अपव्यय नहीं होता तथा पोषक तत्वों की लीचिंग भी नहीं हो पाती। • अधिक उत्पादन, अधिक आर्थिक लाभ।

गोपाल किशोर
सहायक अधिकारी (मा.सं.)
राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड़
केन्द्रीय राज्य फार्म, सूरतगढ

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं निदेशक (वाणिज्यिक) का निगम मुख्यालय में स्वागत

क्षेत्रीय प्रबंधक सम्मेलन की झलकियां

लोम सकल व्याधिन कर मूला

परम आदरणीय गोस्वामी तुलसी दास जी ने राम चरित मानस में लिखा है कि– मोह सकल व्याधिन कर मूला। लेकिन जब एक व्यक्ति ने, कोर्ट परिसर में अपनी पेशी का इन्तजार करते समय, अपनी आप बीती बताई तो मुझे लगा कि गोस्वामी जी को यह भी लिखना चाहिए कि– लोभ सकल व्याधिन कर मूला।

हुआ यह कि... वह व्यक्ति रेलगाडी से परिवार सहित हरिद्वार जा रहा था। श्रीगंगानगर रेलवे स्टेशन पर दो मजबूत कद–काठी के व्यक्ति एक बडा बक्सा लेकर उस डिब्बे में चढे और उन्होंने वह बक्सा उस व्यक्ति के पास ही सैट कर दिया। कुछ देर बैठने के बाद उन्होंने उस व्यक्ति को कहा कि आप मेरे बक्से का ख्याल रखना हम नीचे पानी पीकर आते हैं। काफी देर तक वे नहीं आये और गाडी रवाना हो गयी। कई स्टेशन निकल गये वे दोनों नहीं आये तो उस व्यक्ति के मन में आया कि शायद वे वहीं स्टेशन पर ही छूट गये। यह बक्सा काफी भारी है, लगता है इसमें काफी माल है। अगर हरिद्वार तक नहीं आये तो मै इस बक्से को उतारकर अपने साथ ले जाऊँगा और यही हुआ वे नहीं आये, उस व्यक्ति ने स्टेशन पर कुली की मद्द से वह बक्सा उतार लिया। बक्सा काफी भारी था, इस पर कुली को शक हुआ उसने जी. आर. पी. को इसकी सूचना दे दी।

जी. आर. पी. वाले आये और उन्होंने उस व्यक्ति से पूछा कि यह बक्सा आपका है, उसने कहा हाँ मेरा है। पुलिस वालों ने उसको चैक करने के लिए चाबी माँगी, तो उसने चाबी ढूँढने का नाटक किया और कहा कि चाबी कहीं गिर गयी। पुलिस का शक और बढ गया, उन्होंने बक्से का ताला तोडा तो उसमें एक व्यक्ति की लाश मिली। अब तो उस व्यक्ति की हालत देखने लायक हो गयी। वह बार–बार कहने लगा कि यह बक्सा मेरा नहीं, इसे तो दो व्यक्ति डिब्बे में छोडकर उतर गये लेकिन पुलिस वालों ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया क्योंकि कुछ देर पहले तक तो वह उस बक्से को अपना बता रहा था। उसे परिवार सहित गिरफ्तार करके लिया गया, सिविल पुलिस के हवाले कर दिया गया। कई महीनों में काफी पैसा खर्च करने के बाद जमानत हुई तथा तीन साल हो गये अभी तक कोर्ट में पेशी भुगत रहा है।

वह व्यक्ति उस क्षण को कोस रहा था जब उसके मन में उस बक्से को अपना बताकर अपने घर ले जाने का लोभ पैदा हुआ। अगर वह लालच ना करता और अपनी हक–हलाल की कमाई पर ही सन्तुष्ट रहता तो इन व्याधियों से बच जाता। तभी मेरे मन में आया कि– लोभ सकल व्याधिन कर मूला वाली बात सिद्ध हो रही है। सच ही है कि व्यक्ति पहले अन्दर से चोर बनता है बाद में चोरी को अन्जाम देता है। मन के गन्दे विचार ही बुरे कार्य करवा देते है जिसके कारण मनुष्य नाना प्रकार के दुःख भोगता है। जब लोभ मन में आता है तो उसके वशीभूत होकर मनुष्य कितना अनैतिक कार्य कर सकता है, इसका अन्दाजा लगाना भी मुश्किल है।

अजय कुमार
लेखा अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे

सहसा विदधीत न क्रियाम्।
(किरातार्जुनीयम) शत्रुओं के प्रति क्रोध से व्याकूल भीम को शांत करने के लिए युधिष्ठिर ने कहा– कार्य को एकाएक बिना विचार विमर्श किए प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

हिन्दी भाषा के प्रयोग की चुनौतियां और संभावनाएं

भाषा इस धरती पर होने वाला सबसे बड़ा आविष्कार और सामाजिक उपलब्धि है। एक मानवी रचना होने पर भी वह हमारे निजी और सार्वजनिक जीवन को अद्भुत ढंग से रचती रचाती है और हमें शक्ति संपन्न बनाती है। भाषा संचार का साधन है और सूचना और ज्ञान के संरक्षण का उत्कृष्ट साधन है। वह ज्ञान की पीढ़ी दर पीढ़ी आगे ले जाना भी संभव और सुकर बना देती है। भाषा प्रतीकों की एक ऐसी व्यवस्था होती है और उस समाज के अस्तित्व के साथ जुड़ जाती है। उसके सहारे हम सोचने और कल्पना की उड़ान भरने लगते हैं पर इस क्षमता का उपभोग हम कैसे करते हैं यह एक मुश्किल सवाल है। आज कई भाषाएं मर रही हैं क्योंकि उनके बोलने वाले मर रहे हैं। वस्तुतः भाषाएँ एक पदानुक्रम या "हायरार्की" में जीती हैं और एक शक्तिसंपन्न भाषा दूसरी कम शक्ति की भाषाओं को दबा देती हैं। समाज में भाषा का शक्ति के साथ जुड़ना उसे सीधे–सीधे सामाजिक न्याय के प्रश्न से जोड़ देता है। अक्सर भाषाओं के प्रयोक्ता की हैसियत और प्रतिष्ठा भाषा की हैसियत और प्रतिष्ठा बन जाती है। कुछ बिरले अपवाद हो जाते हैं–जैसे तुलसीदास जी ने रामचरितमानस को अवधी में लिखा और आभिजात्य से न जुड़कर भी वह ऊंची प्रतिष्ठा पा सकी। आज के जमाने में आम तौर पर भाषा का भविष्य और क्षमता उसके प्रयोक्ता पर ही नि र्भर करती है। भारत में प्रायः लोग एक से अधिक भाषाएँ बोलते हैं या कहें द्विभाषी या बहुभाषा भाषी हैं। लोग भिन्न–भिन्न भाषाओं का उपयोग अलग–अलग मौकों पर करते हैं। स्मरणीय है कि सामाजिक यथार्थ के रूप में भाषा हमें जोड़ती है और तोड़ती है। वह जोड़कर सहयोग की ओर ले चलती है और दूरी बढ़ा कर हिंसा तक पैदा कर डालती है। भाषाओं के साथ भारत देश को विभिन्न प्रदेशों में विभाजन करने की घटना ने मानसिक चारदीवारियां खड़ी कर दीं और उत्तर और दक्षिण में भेद कर दिया। दूसरी और सभी भारतीय भाषाओं के सामने विदेशी भाषा अंग्रेजी खड़ी हो गई जिसने समाज में शक्ति और अधिकार की, ऊंच और नीच की, ज्ञान और जड़ता की, शासक और शासित की श्रेणियां बना दीं, ऐसी गहरी खाई खोद दी जिसे पाटना टेढी खीर हो गई और अभी तक इस मुश्किल का हल नहीं मिल सका है।

औपनिवेशिक काल में जो यहाॅ धारा चल निकली वह अभी भी चल रही है। अंग्रेजी भाषा सरकारी काम–काज, विधिक प्रक्रिया और ज्ञानार्जन सबकी भाषा बन गई। वह हमारी श्रेष्ठता या कुलीनता का पर्यायवाची बन गई। हमारी महत्वाकांक्षा अंग्रेजी बोलने और अंग्रेज की ही तरह बनने की ओर आगे बढ़ गई।

आज की परिस्थिति किसी से छिपी नहीं है। वांछित भाषा न जानने के कारण आम नागरिक के सामने अनेक कठिनाईयां उपस्थित होती हैं। आम नागरिक की भूमिकाओं का निर्वाह कठिन हो जाता है। वे सामान्य अधिकारों से वंचित हो जाते हैं। उनके दैनिक कार्य संपादन की गति धीमी पड़ जाती है और उसका नुकसान भी होता है। ज्ञान की शास्त्रीय भाषा के रूप में अंग्रेजी की प्रतिष्ठा होती है। हिंदी वाले छात्र को द्वितीय श्रेणी का नागरिक करार दिया जाता है। लोग व्यवसायिक जीवन में पिछड़ जाते हैं और वह सतत बनी रहती है। हीनता का भाव पैदा होता है। टूटे मनोबल से काम करते हुए और प्रगति में अवरोध के कारण प्रतिद्वंदिता का भाव उपजता है। भाषाजन्य भेदभाव पीढ़ी दर पीढ़ी चलता है और उससे उबरना प्रायः कठिन होता है, वह संचित होता जाता है।

यह आवश्यक है कि भारत के राजभाषा अधिनियम में संशोधन हो ताकि उसके प्रावधानों के विधिवत अनुपालन को सुनिश्चित किया जाए। उसके अनुपालन न करने की अवस्था में उचित दंड की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

संवैधानिक प्रावधानों को सरल भाषा में उपलब्ध कराया जाए। स्वयं राजभाषा अधिनियम ही भाषा की दृष्टि से अंयंत जटिल है और उसे समझना कठिन है। केंद्रीय हिंदी संस्थान से अनुरोध किया जाए की वह उसे सहज और बोधगम्य बना कर उपलब्ध करवाएं। अच्छा हो, भाषा की दृष्टि से आदेशों और अभ्यादेशों का पुनरीक्षण कर उपलब्ध कराया जाए क्योंकि केवल कठिन हिंदी है यह कहकर हम कोई लाभ नहीं प्राप्त कर सकते हैं। सरकारी काम काज में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण का कार्य नियमित रूप से और प्रभावी ढंग से संचालित किया जाए।

भाषा प्रयोग का एक नया आयाम अंतर्राष्ट्रीय क्षितीज पर भी उभर रहा है। आज वैश्वीकरण का युग है और देशों के बीच व्यापारिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक विनिमय तीव्र गति से बढ़ रहा है। विश्व के विभिन्न देशों के साथ भारत का संबंध भिन्न–भिन्न प्रकार का है। पड़ोसी देशों, भारतीय मूल के लोगों की बहुलता देशों से और यूरोप और अमेरिका के विकसित देशों और एशिया के प्रमुख देशों जैसे चीन, जापान आदि के साथ भारत के सहयोग का नया दौर शुरू हुआ है। उनकी आवश्यकताएँ भिन्न हैं। अतः संचार और सहयोग की दृष्टि से हिंदी और भारतीय संस्कृति का संरक्षण का यत्न करते हुए वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इस विविधता को पहचानना होगा और तद्नुसार नीति अपनानी होगी।

आज का विश्व बहुकेंद्रित हो रहा है और देशों के छोटे समूह कार्य कर रहे हैं। देशों का समानता और विशिष्टता दोनों को ध्यान में रख संबंध और सहयोग बनाना अपेक्षितहै। भारत के राजकाज की भाषा के रूप में हिन्दी को प्रतिष्ठित करना आवश्यक है। भारत में अनुवाद और रूपांतर की सुविधा समिति है और प्रायः अंग्रेजी केंद्रित है। एक विदेशी भाषा और अनुवाद केंद्रित विश्वविद्यालय स्थापित होना चाहिए। स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर से पहले, स्नातक स्तर पर हिंदी के साथ–साथ विदेशी भाषा के विकल्प का प्रावधान होना चाहिए। अनुवाद और भाषोत्तर के व्यवसाय को सम्मानजनक रूप देना, युवा वर्ग को आकर्षित करने के लिए अपेक्षित है।

विदेश में बसे भारतीयों के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री तैयार की जाए और उसे उपलब्ध कराया जाए। हिंदी के लिए संसाधन जुटाने का कार्य वरीयता के साथ करना आवश्यक होगा। आज हिंदी का क्षितिज विस्तृत हो रहा है। हिंदी आज अनेक देशों के भाषा के अध्ययन, भारतीय संस्कृति के प्रंसग में अध्ययन, व्यापार की दृष्टि से उपयोग और राजनयिक संबंध के लिए उपयोग की दृष्टि से व्यापक हो रही है। हिंदी भारत की अस्मिता के साथ जुड़ी है और भारत की आत्मा तक पहुंचने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। हिंदी का विषय विदेश मंत्रालय, गृह मंत्रालय और मानव संसाधन वि कास मंत्रालय से जुड़ा हुआ है। उनके कार्यों में तालमेल बैठाना परमावश्यक है। इससे दुहराव से बच सकेंगे, व्यवस्थागत बाधाओं से निपट पायेंगे, संसाधनों, का उचित उपयोग होगा और हम हिंदी के संवर्धन के लक्ष्य को कम समय में प्राप्त कर सकेंगे।

साभार

राजभाषा भारती

भारत सरकार, गृह मंत्रालय,

राजभाषा विभाग

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून)

विश्व पर्यावरण दिवस हर साल 5 जून को मनाया जाता है। यह उन प्रमुख माध्यमों में से एक है, जिसके माध्यम से संयुक्त राष्ट्र (UN) दुनिया भर में पर्यावरण जागरूकता फैलाता है और राजनेताओं का ध्यान आकर्षित करता है। यह दिवस पर्यावरण की रक्षा के लिए दुनिया भर में जागरूकता फैलाने और इससे सम्बन्धित कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए मनाया जाता है। मानव पर्यावरण पर स्टॉकहोम सम्मेलन के पहले दिन संयुक्त राष्ट्र ने 5 जून 1972 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का निर्णय लिया। संयुक्त राष्ट्र ने इसके संरक्षण के महत्व को बढ़ावा देने के लिए 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाने के लिए नामित किया है। यह वह समय है जब हमें जीव–जगत के साथ के मूलभूत संबंधों के बारे में सोचना चाहिए।

विश्व पर्यावरण दिवस का थीम

विश्व पर्यावरण दिवस 2021 का थीम 'Ecosystem Restoration' है और पाकिस्तान इस दिन का वैश्विक मेजबान हैं। यह विश्व पर्यावरण दिवस पारिस्थिति की तंत्र की बहाली (2021–2030) पर संयुक्त राष्ट्र के दशक की शुरुआत करेगा, जो जंगलों से लेकर खेत तक, पहाड़ों की चोटी से लेकर समुद्र की गहराई तक अरबों हेक्टेयर को पुनर्जीवित करने का एक वैश्विक मिशन है। काफी समय से, मनुष्य ग्रह के पारिस्थितिक तंत्र का दोहन कर रहा हैं। हर तीन सेकंड में, दुनिया एक फुटबॉल पिच को कवर करने के लिए पर्याप्त जंगल खत्म होता है और पिछली शताब्दी में, हमने आधे आर्द्रभूमि को नष्ट कर दिया है।

महत्व

वनों की कटाई, बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग, खाद्य पदार्थों के नुकसान और अपव्यय, प्रदूषण आदि जैसे पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता फैलाना बहुत महत्वपूर्ण है। पूरी दुनिया में, दुनिया भर में प्रभावशीलता लाने के लिए एक विशेष थीम और नारे के साथ कई अभियान चलाए जाते हैं। इस दिन को सफलतापूर्वक कार्बन न्यूट्रालिटी तक पहुंचने, ग्रीन हाउस प्रभावों को कम करने, निम्न कोटि की भूमि पर पौधारोपण, सौर स्रोतों के माध्यम से ऊर्जा उत्पादन, प्रवाल भित्तियों और मैंग्रोव को बढ़ावा देने और कई और मुद्दों के लिए मनाया जाता है। यह दिवस विभिन्न समाजों और समुदायों के आम लोगों को इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लेने के साथ–साथ पर्यावरण सुरक्षा उपायों को विकसित करने में सक्रिय एजेंट बनने के लिए प्रोत्साहित करता है।

बुढापा एक वरदान

आप शीर्षक पढकर चौक गये होंगे लेकिन सच्चाई यही है कि बुढापा भगवान का एक वरदान है। जो मनुष्य बुढापे का आनन्द लिए बिना ही दुनिया से चला गया, उसका जीवन ना केवल अधूरा रहा बल्कि वह जीवन की सच्चाई का अनुभव किये बिना ही, गलत फहमी मे, इस रंगमंच से चला गया।

आमतौर पर यदि किसी बूढे व्यक्ति से पूछा जाय कि ताऊ क्या हाल है तो वे अपना दुखडा रोने लगते है कि... क्या हाल होगा बुढापे में, बेटा बुढापा तो खुद में ही एक रोग है, शरीर साथ नहीं देता, ऑखों से दिखता नहीं है, चला फिरा जाता नहीं, खाया पिया हजम नहीं होता, कोई बात नहीं मानता सब अपनी मनमर्जी चलाते है, किसी को बूढे आदमी के पास बैठने की फुरसत नहीं, अब तो भगवान उठा ले... आदि कह कर दुखी होता है तथा दूसरों को भी दुखी करता है। यह हुआ बुढापे को सांसारिक व मोह ममता वाले नजरिया से देखने का परिणाम।

इसी बुढापे को दूसरे नजरिये से देखें तो....

बुढापा आने तक मनुष्य अपनी जिम्मेवारियों को पूरा कर चुका होता है। बच्चे बडे हो चुके होते है, उनकी शादी विवाह व परिवार हो चुका होता हैं, वह अपने व्यवसाय/ नौकरी व परिवार के पालन पोषण में मगन हो जाते हैं। अब परिवार वाले ना तो बूढे व्यक्ति से सलाह लेते है और ना मदद की उम्मीद रखते हैं, यानि परिवार की जिम्मेवारी खत्म, आप पूरे फुरसत में, मन चाहे तो घर के छोटे–मोटे काम में सहयोग करादें ना मन करे तो ना करें, मन करे तो सामाजिक काम करें, जब तक मन करे एकान्त में बैठ कर भगवान का स्मरण करें, थक जाए तो सो जाए। कोई जिम्मेवारी नहीं, पूरे मस्त मलंग, अब आपके व भगवान के बीच में कोई बाधा नही ना नौकरी, ना व्यवसाय, ना परिवार, ना रिश्तेदार कोई नहीं, सब ने किनारा कर लिया। बस मौज ही मौज और अगर धर्मपत्नी पहले चली गयी तो उसकी भी चिन्ता समाप्त। देखो भाई इस रंगमंच से जाना तो सभी को है, सदा कोई नहीं रहा। जब जाना निश्चित है और जहॉ जिसके पास जाना है उससे सम्बन्ध प्रगाढ करने का सबसे अच्छा मौका, परिस्थिति बुढापे में ही मिल सकती है। तो बुढापे में हो गयी ना मौज।

भगवान अपने भक्त का अहंकार व वहम समाप्त कर उसे शुद्ध बनाते हैं, इसलिए बुढापे में परिवार से तिरस्कार करवाकर परिवार की असलियत दिखाकर मोह ममता से छुटकारा दिलाते हैं, पद प्रतिष्ठा समाप्त कर उसका घमण्ड दूर करते हैं तथा शरीर कमजोर व कुरूप बनाकर बल व सुन्दरता का अहंकार मिटाकर संदेश देते है कि अब सच्चाई अनुभव कर ली अब तो मेरे चिन्तन, मनन में लग जाओ। तो बुढापे में हुई ना भगवान की कृपा।

इसी प्रकार भगवान, ऑखों की रोशनी व सुनने की क्षमता कम करके संदेश देते हैं कि अब ज्यादा संसार को देखने व सुनने की जरूरत नहीं। दॉत गिराकर व पाचन क्रिया कम करके बताते हैं कि ज्यादा सख्त व गरिष्ठ भोजन की शरीर को आवश्यकता नहीं है, अब तो काम चलाऊ व पचने योग्य चीजें खाकर सन्तुष्ट रहो, शरीर शिथिल करके संदेश देते हैं कि अब और भटकने की जरूरत नहीं, शान्त भाव से एक ही स्थान पर रहकर प्रभु स्मरण करते हुये इस रंगमंच से जाने की तैयारी करो। इस प्रकार भगवान बुढापे में सभी परिस्थितियॉ कल्याणकारी बनाकर मनुष्य को अपना जीवन सफल बनाने में पूरी मदद करते है। भगवान हम पर दया करके बुढापा देते है कि यह मनुष्य जीवन भर दुनियादारी में फँसा रहा अब तो इसका कल्याण हो जाए। भगवान हमें बुढापा देकर हम सभी पर कितनी दया करते हैं। वास्तव में बुढापा भगवान का बहुत बडा वरदान है।

हम सभी को अब बुढापे से डरना नहीं है, दुखी नहीं होना है बल्कि प्रभू के संदेशों को समझकर, उसके अनुरूप अपनी सोच बनाकर बुढापे का आनन्द लेते हुए इस रंगमंच से जाना है। हम सभी का बुढापा आनन्दमय एवं कल्याणकारी होगा इसमें कोई शक नहीं है।

रघुराज यादव
सहायक (कृषि) ग्रेड–I
केन्द्रीय राज्य फार्म, हिसार

प्रदर्शनियों/मेलों की झलकियां

दैनिक भास्कर

श्रीगंगानगर जिला भास्कर 04-01-2022

जागरूकता • किसानों ने आधुनिक कृषि यंत्रों, विशिष्ट संतति बीज उत्पादन व अन्य कृषि से जुड़ी जानकारियां प्राप्त की

कृषि उपकरणों का प्रदर्शन,150 किसानों ने लिया हिस्सा

डीडी पारीक, जैतसर। नेशनल सीड कार्पोरेशन लिमिटेड के अंतर्गत आने वाले केंद्रीय राज्य फार्म सरदारगढ़ में सोमवार को 150 से अधिक किसानों ने फार्म क्षेत्र में रहकर कृषि संबंधी जानकारी प्राप्त की। केंद्रीय राज्य फार्म सरदारगढ़ में सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर मेकेनाइजेशन के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सरपंच व किसानों ने भाग लिया। इस दौरान कृषि से जुड़े उपकरणों का प्रदर्शन किया गया। प्रभारी व केंद्रीय राज्य फार्म सरदारगढ़ के डायरेक्टर डॉ. आरएस चंदेल, केंद्रीय राज्य फार्म जैतसर के निदेशक सुशांत प्रियदर्शी, 7 एसजीएम सरपंच रूपाराम, भगवानसर सरपंच सीमाराज मुंजाल, भैरूपुरा सोलवानी के पूर्व सरपंच मुखराम, समाजसेवी कालूराम मुंजाल थे। निदेशक आरएस चंदेल ने खेतों में कृषि यंत्रों का उपयोग व जैविक खेती के बारे में विस्तार से जानकारी दी। धान की कटाई के बाद बिना जुताई के खेतों में जई बीज का उत्पादन करने के प्रक्षेत्र का प्रदर्शन किया। केंद्रीय राज्य फार्म जैतसर के निदेशक सुशांत प्रियदर्शी ने कृषि में काम आने वाली आधुनिक मशीनों व उनके उपयोग के बारे में बताया। सहायक महाप्रबंधक (उत्पादन) मुरलीधर ने किसानों को रबी फसलों में कीट नियंत्रण के प्रभावी उपायों, प्रबंधक (उत्पादन) अजीत कुमार पांडेय गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन के बारे में बताया। प्रभारी उद्यान आनंद कुमार ने किसानों को उद्यान फसलों में वनस्पति प्रजनन व फलोत्पादन के बारे में समझाया। आसपास गांवों के किसानों ने पूर्ण रुचि लेते हुए आधुनिक कृषि यंत्रों, विशिष्ट संतति बीज उत्पादन व अन्य कृषि से जुड़ी जानकारियां प्राप्त की।

जीरो टीलेज पद्धति से होगा राइस बेल्ट के किसानों को फायदा

गांव सरदारगढ़ के फार्म में आयोजित कृषि संगोष्ठी में जीरो टीलेज पद्धति को राइस बेल्ट के किसानों से विस्तारपूर्वक समझा। फार्म निदेशक चंदेल ने बताया कि इस पद्धति के माध्यम से धान की फसल कटाई के बाद बिना जुताई जई फसल को बोया जा सकता है। इसमें जीरो टीलेज यंत्र का प्रयोग किया जाता है। धान कटाई के बाद इस पद्धति में जुताई करना आवश्यक नहीं है। जिसके कारण किसान को जुताई में लगने वाले पैसे की बचत हो जाती है। धान कटाई के बाद उसका बचा भूसा नई फसल की बिजाई होने से स्वतः ही नष्ट होकर कार्बनिक खाद बनाता है।

हरित क्रांति

'अहिंसा परमो धर्मः'
(अनुशासनपर्व)
अर्थ–अहिंसा परम धर्म है।

भारत में हरित क्रांन्ति की शुरुआत सन् 1966–1967 हुई थी। इसे प्रारम्भ करने का श्रेय प्रोफेसर नारमन बोरलॉग को जाता हैं। लेकिन भारत में एम. एस. स्वामीनाथन को इसका जनक माना जाता है। भारत के तत्कालीन कृषि एवं खाद्य मन्त्री बाबू जगजीवन राम को हरित क्रान्ति का प्रणेता माना जाता हैं, उन्होंने एम.एस. स्वामीनाथन कमेटी की सिफारिशों पर हरित क्रांति का सफलतम संचालन किया, जिसके सन्तोषजनक परिणाम भविष्य में देखने को मिले। हरित क्रान्ति से अभिप्राय देश के सिंचित एवं असिंचित कृषि क्षेत्रों में अधिक उपज देने वाले संकर तथा बौने बीजों के उपयोग से फसल उत्पादन में वृद्धि करना है। हरित क्रान्ति भारतीय कृषि में लागू की गई उस विकास विधि का परिणाम है, जो 1960 के दशक में पारम्परिक कृषि को आधुनिक तकनीकि द्वारा प्रतिस्थापित किए जाने के रूप में सामने आई। चूंकि कृषि क्षेत्र में यह तकनीकि एकाएक आई, तेजी से इसका विकास हुआ और थोड़े ही समय में इससे इतने आश्चर्यजनक परिणाम निकले कि देश के योजनाकारों, कृषि विशेषज्ञों तथा राजनीतिज्ञों ने इस अप्रत्याशित प्रगति को ही 'हरित क्रान्ति' की संज्ञा प्रदान कर दी। हरित क्रान्ति की संज्ञा इसलिये भी दी गई, क्योंकि इसके फलस्वरूप भारतीय कृषि निर्वाह स्तर से ऊपर उठकर आधिक्य स्तर पर आ चुकी थी।

उपलब्धियाँ

हरित क्रान्ति के फलस्वरूप देश के कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। कृषि आगतों में हुए गुणात्मक सुधार के फलस्वरूप देश में कृषि उत्पादन बढ़ा है। खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता आई है। व्यवसायिक कृषि को बढ़ावा मिला है। कृषकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ है। कृषि आधिक्य में वृद्धि हुई है। हरित क्रान्ति के फलस्वरूप गेहूँ, गन्ना, मक्का तथा बाजरा आदि फ़सलों के प्रति हेक्टेयर उत्पादन एवं कुल उत्पादकता में काफ़ी वृद्धि हुई है। हरित क्रान्ति की उपलब्धियों को कृषि में तकनीकि एवं संस्थागत परिवर्तन एवं उत्पादन में हुए सुधार के रूप में निम्नवत देखा जा सकता है–

(क) कृषि में तकनीकि एवं संस्थागत सुधार

1. **रासायनिक उर्वरकों का प्रयोगः** नवीन कृषि नीति के परिणामस्वरूप रासायनिक उर्वरकों के उपभोग की मात्रा में तेजी से वृद्धि हुई है। 1960–1961 में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग प्रति हेक्टेयर दो किलोग्राम होता था, जो 2008–2009 में बढ़कर 128.6 किग्रा प्रति हेक्टेयर हो गया है। इसी प्रकार, 1960–1961 में देश में रासायनिक खादों की कुल खपत 2.92 लाख टन थी, जो बढ़कर 2008–2009 में 249.09 लाख टन हो गई।

2. **उन्नतशील बीजों के प्रयोग में वृद्धिः** देश में अधिक उपज देने वाले उन्नतशील बीजों का प्रयोग बढ़ा है तथा बीजों की नई नई किस्मों की खोज की गई है। अभी तक अधिक उपज देने वाला कार्यक्रम गेहूँ, धान, बाजरा, मक्का व ज्वार जैसी फ़सलों पर लागू किया गया है, परन्तु गेहूँ में सबसे अधिक सफलता प्राप्त हुई है। वर्ष 2008–2009 में 1,00,000 क्विंटल प्रजनक बीज तथा 9.69 लाख क्विंटल आधार बीजों का उत्पादन हुआ तथा 190 लाख प्रमाणित बीज वितरित किये गये।

3. **सिंचाई सुविधाओं का विकासः** नई विकास विधि के अन्तर्गत देश में सिंचाई सुविधाओं का तेजी के साथ विस्तार किया गया है। 1951 में देश में कुल सिंचाई क्षमता 223 लाख हेक्टेयर थी, जो बढ़कर 2008–2009 में 1,073 लाख हेक्टेयर हो गई। देश में वर्ष 1951 में कुल संचित क्षेत्र 210 लाख हेक्टेयर था, जो बढ़कर 2008–2009 में 673 लाख हेक्टेयर हो गया।

4. **पौध संरक्षणः** नवीन कृषि विकास विधि के अन्तर्गत पौध संरक्षण पर भी ध्यान दिया जा रहा है। इसके अन्तर्गत खरपतवार एवं कीटों का नाश करने के लिये दवा छिड़कने का कार्य किया जाता है तथा टिड्डी दल पर नियन्त्रण करने का प्रयास किया जाता है। वर्तमान में समेकित कृषि प्रबन्ध के अन्तर्गत पारिस्थितिकी अनुकूल कृमि नियंत्रण कार्यक्रम लागू किया गया है।

5. **बहुफ़सली कार्यक्रमः** बहुफ़सली कार्यक्रम का उद्देश्य एक ही भूमि पर वर्ष में एक से अधिक फ़सल उगाकर उत्पादन को बढ़ाना है। अन्य शब्दों में भूमि की उर्वरता शक्ति को नष्ट किये बिना, भूमि के एक इकाई क्षेत्र से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करना ही बहुफ़सली कार्यक्रम कहलाता है। 1966—1967 में 36 लाख हेक्टेयर भूमि में बहुफ़सली कार्यक्रम लागू किया गया। वर्तमान समय में भारत की कुल सिंचित भूमि के 71 प्रतिशत भाग पर यह कार्यक्रम लागू है।

6. **आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रयोगः** नई कृषि विकास विधि एवं हरित क्रान्ति में आधुनिक कृषि उपकरणों, जैसे— ट्रैक्टर, थ्रेसर, हार्वेस्टर, बुलडोजर तथा डीजल एवं बिजली के पम्पसेटों आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस प्रकार कृषि में पशुओं तथा मानव शक्ति का प्रतिस्थापन संचालन शक्ति द्वारा किया गया है, जिससे कृषि क्षेत्र के उपयोग एवं उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

7. **कृषि सेवा केन्द्रों की स्थापनाः** कृषकों में व्यवसायिक साहस की क्षमता को विकसित करने के उद्देश्य से देश में कृषि सेवा केन्द्र स्थापित करने की योजना लागू की गई है। इस योजना में पहले व्यक्तियों को तकनीकि प्रशिक्षण दिया जाता है, फिर इनसे सेवा केंद्र स्थापित करने को कहा जाता है। इसके लिये उन्हें राष्ट्रीयकृत बैंकों से सहायता दिलाई जाती है। अब तक देश में कुल 1,314 कृषि सेवा केन्द्र स्थापित किये जा चुके हैं।

8. **कृषि उद्योग निगमः** सरकारी नीति के अन्तर्गत 17 राज्यों में कृषि उद्योग निगमों की स्थापना की गई है। इन निगमों का कार्य कृषि उपकरणों व मशीनरी की पूर्ति तथा उपज प्रसंस्करण एवं भण्डारण को प्रोत्साहन देना है। इसके लिये यह निगम, किराया क्रय पद्धति के आधार पर ट्रैक्टर, पम्पसेट एवं अन्य मशीनरी को वितरित करता है।

9. **विभिन्न निगमों की स्थापनाः** हरित क्रान्ति की प्रगति मुख्यतः अधिक उपज देने वाली किस्मों एवं उत्तम सुधरे हुये बीजों पर निर्भर करती है। इसके लिये देश में 400 कृषि फार्म स्थापित किये गये हैं। 1963 में राष्ट्रीय बीज निगम की स्थापना की गई है। 1963 में राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम की स्थापना की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य कृषि उपज का विपणन, प्रसंस्करण एवं भण्डारण करना है। विश्व बैंक की सहायता से राष्ट्रीय बीज परियोजना भी प्रारम्भ की गई, जिसके अन्तर्गत कई बीज निगम बनाए गए हैं। भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारिता विपणन संघ (नेफेड) एक शीर्ष विपणन संगठन है, जो प्रबन्धन, विपणन एवं कृषि सम्बंधित चुनिन्दा वस्तुओं के आयात निर्यात का कार्य करता है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक की स्थापना कृषि वित्त के कार्य हेतु की गई है। कृषि के लिये खाद्य निगम एवं उर्वरक साख गारन्टी निगम, ग्रामीण विद्युतीकरण निगम आदि भी स्थापित किए गए हैं।

10. **मृदा परीक्षणः** मृदा परीक्षण कार्यक्रम के अनतर्गत विभिन्न क्षेत्रों की मिट्टी का परीक्षण सरकारी प्रयोगशालाओं में किया जाता है। इसका उद्देश्य भूमि की उर्वरा शक्ति का पता लगाकर कृषकों को तदुनुरूप रासायनिक खादों एवं उत्तम बीजों के प्रयोग की सलाह देना है। वर्तमान समय में इन सरकारी प्रयोशालाओं में प्रतिवर्ष सात लाख नमूनों का परीक्षण किया जाता है। कुछ चलती फिरती प्रयोगशालाएं भी स्थापित की गईं हैं, जो गांव—गांव जाकर मौके पर मिट्टी का परीक्षण करके किसानों को सलाह देतीं हैं।

11. **भूमि संरक्षणः** भूमि संरक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि योग्य भूमि को क्षरण से रोका तथा ऊबड़—खाबड़ भूमि को समतल बनाकर कृषि योग्य बनाया जाता है। यह कार्यक्रम उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश में तेजी से लागू है।

12. **कृषि शिक्षा एवं अनुसन्धानः** सरकार की कृषि नीति के अन्तर्गत कृषि शिक्षा का विस्तार करने के लिये पन्तनगर में पहला कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है। आज कृषि और इससे सम्बन्धित क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के लिये 4 कृषि विश्वविद्यालय, 39 राज्य कृषि विश्वविद्यालय और इम्फाल में एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है। कृषि अनुसन्धान हेतु 'भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद' है, जिसके अन्तर्गत 53 केन्द्रीय संस्थान, 32 राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र, 12 परियोजना निदेशालय 64 अखिल भारतीय समन्वय अनुसन्धान परियोजनायें है।

इसके अतिरिक्त, देश में 527 कृषि विज्ञान केन्द्र हैं, जो शिक्षण एवं प्रशिक्षण का कार्य कर रहे हैं। कृषि शिक्षा एवं प्रशिक्षण की गुणवत्ता बनाये रखने के लिये विभिन्न संस्थाओं के कम्प्यूटरीकरण और इन्टरनेट की सुविधा प्रदान की गई है।

(ख) कृषि उत्पादन में सुधार

1. **उत्पादन तथा उत्पादकता में वृद्धिः** हरित क्रान्ति अथवा भारतीय कृषि में लागू की गई नई विकास विधि का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि देश में फ़सलों के क्षेत्रफल में वृद्धि, कृषि उत्पादन तथा उत्पादकता में वृद्धि हुई है। विशेषकर गेहूँ, बाजरा, धान, मक्का तथा ज्वार के उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है। जिसके परिणामस्वरूप भारत, खाद्यान्नों में आत्मनिर्भर हो गया। 1951–1952 में देश में खाद्यान्नों का कुल उत्पादन 5.09 करोड़ टन था, जो क्रमशः बढ़कर 2008–2009 में 23.38 करोड़ टन हो गया। इसी तरह प्रति हेक्टेयर उत्पादकता में भी पर्याप्त सुधार हुआ है। वर्ष 1950–1951 में खाद्यान्नों का उत्पादन 522 किग्रा प्रति हेक्टेयर था, जो बढ़कर 2008–2009 में 1,893 किग्रा प्रति हेक्टेयर हो गया। हाँ, भारत में खाद्यान्न उत्पादनों में कुछ उच्चावचन भी हुआ है, जो बुरे मौसम आदि के कारण रहा जो यह सिद्ध करता है कि देश में कृषि उत्पादन अभी भी मौसम पर निर्भर करता है।

2. **कृषि के परम्परागत स्वरूप में परिवर्तनः** हरित क्रान्ति के फलस्वरूप खेती के परम्परागत स्वरूप में परिवर्तन हुआ है और खेती व्यवसायिक दृष्टि से की जाने लगी है। जबकि पहले सिर्फ पेट भरने के लिये की जाती थी। देश में गन्ना, कपास, पटसन तथा तिलहनों के उत्पादन में वृद्धि हुई है। कपास का उत्पादन 1960–1961 में 5.6 मिलियन गांठ था, जो बढ़कर 2008–2009 में 27 मिलियन गांठ हो गया। इसी तरह तिलहनों का उत्पादन 1960–1961 में 7 मिलियन टन था, जो बढ़कर 2008–2009 में 28.2 मिलियन टन हो गया। इसी तरह पटसन, गन्ना, आलू तथा मूंगफली आदि व्यवसायिक फ़सलों के उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। वर्तमान समय में देश में बाग़बानी फ़सलों, फलों, सब्जियों तथा फूलों की खेती को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

3. **कृषि बचतों में वृद्धिः** उन्नतशील बीजों, रासायनिक खादों, उत्तम सिंचाई तथा मशीनों के प्रयोग से उत्पादन बढ़ा है। जिससे कृषकों के पास बचतों की उल्लेखनीय मात्रा में वृद्धि हुई है। जिसको देश के विकास के काम में लाया जा सका है।

4. **अग्रगामी तथा प्रतिगामी संबंधों में मजबूतीः** नवीन प्रौद्योगिकी तथा कृषि के आधुनीकरण ने कृषि तथा उद्योग के परस्पर सम्बन्ध को और भी मजबूत बना दिया है। पारम्परिक रूप में यद्यपि कृषि और उद्योग का अग्रगामी सम्बन्ध पहले से ही प्रगाढ़ था, क्योंकि कृषि क्षेत्र द्वारा उद्योगों को अनेक आगत उपलब्ध कराये जाते हैं। परन्तु इन दोनों में प्रतिगामी सम्बन्ध बहुत ही कमज़ोर था, क्योंकि उद्योग निर्मित वस्तुओं का कृषि में बहुत ही कम उपयोग होता था। परन्तु कृषि के आधुनीकरण के फलस्वरूप अब कृषि में उद्योग निर्मित आगतों, जैसे– कृषि यन्त्र एवं रासायनिक उर्वरक आदि, की मांग में भारी वृद्धि हुई है, जिससे कृषि का प्रतिगामी सम्बन्ध भी सुदृढ़ हुआ है। अन्य शब्दों में कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्र के सम्बन्धों में अधिक मजबूती आई है।

इस तरह स्पष्ट है कि हरित क्रान्ति के फलस्वरूप देश में कृषि आगतों एवं उत्पादन में पर्याप्त सुधार हुआ है। इसके फलस्वरूप कृषक, सरकार तथा जनता सभी में यह विश्वास जाग्रत हो गया है कि भारत कृषि पदार्थों के उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर ही नहीं हो सकता, बल्कि निर्यात भी कर सकता है।

विश्लेषण

देश में योजना काल में कृषि के क्षेत्र में पर्याप्त विकास हुआ है। कुल कृषि क्षेत्र बढ़ा है, फ़सल के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है, सिंचित क्षेत्र बढ़ा है, रासायनिक खादों के उपयोग में वृद्धि हुई है तथा आधुनिक कृषि यन्त्रों का उपयोग होने लगा है। इन सब बातों के होते हुए भी अभी तक देश में कृषि का विकास उचित स्तर तक नहीं पहुँच पाया है, क्योंकि यहाँ प्रति हेक्टेयर कृषि उत्पादन अन्य विकसित देशों की तुलना में कम है। अभी अनेक कृषि उत्पादों का आयात करना पढ़ता है। क्योंकि उनका उत्पादन मांग की तुलना में कम है। कृषि क्षेत्र का अभी भी एक बड़ा भाग असिंचित है। कृषि में यन्त्रीकरण का स्तर अभी भी कम है, जिससे उत्पादन लागत अधिक आती है। कृषकों को विभागीय सुविधाएँ पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलती हैं, जिससे कृषि विकास में बाधा उत्पन्न होती है। अतः इस बात की आवश्यकता है कि कृषि में तकनीकि एवं संस्थागत सुधारों को अधिक कारगर ढंग से लागू कर कृषि क्षेत्र का और अधिक विकास किया जाए।

हरित क्रान्ति का विस्तार

केन्द्रीय बजट 2010—2011 में कृषि क्षेत्र के विकास के लिए बनाई गई कार्य योजना के पहले घटक में ग्राम सभाओं तथा किसान परिवारों के सक्रिय सहयोग से देश के पूर्वी क्षेत्र बिहार, छत्तीसगढ़, पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल तथा उड़ीसा में हरित क्रान्ति के विस्तार के लिये 400 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

कमियाँ तथा समस्याएँ

देश में हरित क्रान्ति के फलस्वरूप कुछ फ़सलों के उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि हुई है, खाद्यान्नो के आयात में कमी आई है, कृषि के परम्परागत स्वरूप में परिवर्तन आया है, फिर भी इस कार्यक्रम में कुछ कमियाँ परिलक्षित होती हैं। हरित क्रान्ति की प्रमुख कमियों एवं समस्याओं को निम्न रूप में प्रंस्तुत किया जा सकता है—

- **प्रभाव** — हरित क्रान्ति का प्रभाव कुछ विशेष फ़सलों तक ही सीमित रहा, जैसे— गेहूँ, ज्वार, बाजरा। अन्य फ़सलो पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। यहाँ तक कि चावल भी इससे बहुत ही कम प्रभावित हुआ है। व्यापारिक फ़सलें भी इससे अप्रभावित ही हैं।
- **पूंजीवादी कृषि को बढ़ावा** — अधिक उपजाऊ किस्म के बीज एक पूंजी—गहन कार्यक्रम हैं, जिसमें उर्वरकों, सिंचाई, कृषि यन्त्रों आदि आगतों पर भारी मात्रा में निवेश करना पड़ता है। भारी निवेश करना छोटे तथा मध्यम श्रेणी के किसानों की क्षमता से बाहर हैं। इस तरह, हरित क्रान्ति से लाभ उन्हीं किसानों को हो रहा है, जिनके पास निजी पम्पिंग सेट, ट्रैक्टर, नलकूप तथा अन्य कृषि यन्त्र हैं। यह सुविधा देश के बड़े किसानों को ही उपलब्ध है। सामान्य किसान इन सुविधाओं से वंचित हैं।
- **संस्थागत सुधारों की आवश्यकता पर बल नहीं**— नई विकास विधि में संस्थागत सुधारों की आवश्यकता की सर्वथा अवहेलना की गयी है। संस्थागत परिवर्तनो के अन्तर्गत सबसे महत्वपूर्ण घटक भू—धारण की व्यवस्था है। इसकी सहायता से ही तकनीकी परिवर्तन द्वारा अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। देश में भूमि सुधार कार्यक्रम सफल नहीं रहे हैं तथा लाखों कृषकों को आज भी भू—धारण की निश्चितता नहीं प्रदान की जा सकी है।
- **श्रम—विस्थापन की समस्या** — हरित क्रान्ति के अन्तर्गत प्रयुक्त कृषि यन्त्रीकरण के फलस्वरूप श्रम—विस्थापन को बढ़ावा मिला है। ग्रामीण जनसंख्या का रोज़गार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने का यह भी एक कारण है।
- **आय की बढ़ती असमानता**— कृषि में तकनीकी परिवर्तनों का ग्रामीण क्षेत्रों में आय—वितरण पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। डॉ. वी. के. आर. वी. राव के अनुसार, "यह बात अब सर्वविदित है कि तथाकथित हरित क्रान्ति, जिसने देश में खाद्यान्नों

का उत्पादन बढ़ाने में सहायता दी है, इसके साथ ही ग्रामीण आय में असमानता बढ़ी है, बहुत से छोटे किसानों को अपने काश्तकारी अधिकार छोड़ने पड़े हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक और आर्थिक तनाव बढ़े हैं।”

- **आवश्यक सुविधाओं का अभाव**– हरित क्रान्ति की सफलता के लिए आवश्यक सुविधाओं यथा– सिंचाई व्यवस्था, कृषि साख, आर्थिक जोत तथा सस्ते आगतों आदि के अभाव में कृषि–विकास के क्षेत्र में वांछित सफलता नहीं प्राप्त हो पा रही है।
- **क्षेत्रीय असन्तुलन**– हरित क्रान्ति का प्रभाव पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र तथा तमिलनाडु आदि राज्यों तक ही सीमित है। इसका प्रभाव सम्पूर्ण देश पर ना फैल पाने के कारण देश का सन्तुलित रूप से विकास नहीं हो पाया। इस तरह, हरित क्रान्ति सीमित रूप से ही सफल रही है।

हरित क्रान्ति की सफलता के लिये सुझाव

- **संस्थागत परिवर्तनों को प्रोत्साहन**– हरित क्रान्ति की सफलता के लिए भूमि सुधार कार्यक्रमों को प्रभावी और विस्तृत रूप से लागू किया जाना चाहिए। बटाईदारों को स्वामित्व का अधिकार दिलाया जाना चाहिए। सीमा निर्धारण से प्राप्त अतिरिक्त भूमि को भूमिहीन कृषकों में वितरित किया जाना चाहिए। चकबन्दी को प्रभावी बनाकर जोतों के विभाजन पर प्रभावी रोक लगाई जानी चाहिए।
- **कृषि वित्त की सुविधा**– कृषि वित्त की सुविधाएँ बढ़ाते समय छोटे किसानों को रियायती दर पर साख की सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए, ताकि वे आवश्यक उन्नत बीज, रासायनिक खाद तथा कृषि उपकरण क्रय कर सकें।
- **रोज़गार के अवसरों में वृद्धि**– श्रम प्रधान तकनीकों को अपनाया जाना चाहिए तथा ग्रामीण क्षेत्रों में बेकारी की समस्या के समाधान के लिए कुटीर एवं ग्राम उद्योगों का तेजी से विस्तार किया जाना चाहिए।
- **सिंचाई के साधनों का विकास**– देश में सिंचाई की सुविधाओं का पर्याप्त विकास किया जाना चाहिए, ताकि कृषक अधिक उपज देने वाली किस्मों का पूरा लाभ उठा सकें। इस सन्दर्भ में लघु सिंचाई परियोजनाओं के विस्तार पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- **अन्य संरचनात्मक सुधारों का विस्तार**– कृषि के विकास के लिए आवश्यक बिजली, परिवहन सहित अन्य संरचनात्मक सुविधाओं का विकास किया जाना चाहिए, तभी हरित क्रान्ति अन्य फ़सलों तथा क्षेत्रों तक फैल सकेगी।
- **हरित क्रान्ति का अन्य फसलों तक फैलाव**– हरित क्रान्ति की सफलता के लिये यह आवश्यक है कि इसका विस्तार चावल तथा अन्य फसलों की खेती तक किया जाए। चावल के साथ दालें, कपास, गन्ना, तिलहन, जूट आदि व्यापारिक फसलों के संबंध में भी उत्पादन वृद्धि संतोषजनक नहीं रही है। अतः इन फसलों को भी हरित क्रान्ति के प्रभाव क्षेत्र में शामिल किया जाना चाहिए।
- **छोटे खेत और छोटे किसानों को सम्बद्ध करना**– छोटे खेतों तथा छोटे किसानों को भी हरित क्रान्ति से सम्बद्ध करना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि–

  (क) भूमि सुधार कार्यक्रमों को शीघ्रता और प्रभावी ढंग से लागू किया जाना चाहिए,

  (ख) छोटे–छोटे किसानों को उन्नत बीज, खाद आदि आवश्यक चीजों को ख़रीदने के लिये उदार शर्तों एवं दरों पर साख सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए,

  (ग) साधारण कृषि उपकरणों की ख़रीद के सम्बन्ध में दी गयी सुविधाओं के अतिरिक्त बड़ी–बड़ी फार्म मशीनरी यथा–ट्रैक्टर, हार्वेस्टर आदि को सरकार की ओर से किराए पर दिया जाना चाहिए,

  (घ) बहुत छोटी–छोटी जोतों वाले किसानों को सहकारी खेती को अपनाने के लिये प्रेरित किया जाना चाहिए।
- **समन्वित फार्म नीति**– हरित क्रान्ति की सफलता के लिए समन्वित फार्म नीति अपनायी जानी चाहिए, ताकि फार्म तकनीकि व आगतों के मूल्यों के सम्बन्ध में एक उचित नीति अपनाई जा सके तथा कृषकों

को उन्नतशील बीज, खाद, कीटनाशक तथा कृषि यन्त्र एवं उपकरण उचित मूल्य पर समय पर उपलब्ध हो सकें। इसके अतिरिक्त, सरकार को समस्त कृषि उपजों की बिक्री का प्रबन्ध करना चाहिए तथा उचित मूल्य पर कृषि उत्पादों को ख़रीदने की गारन्टी भी देनी चाहिए।

नयी राष्ट्रीय कृषि नीति

केन्द्र सरकार ने 'नयी राष्ट्रीय कृषि नीति' की घोषणा 28 जुलाई 2000 को की थी। इस नीति में सरकार ने 2020 तक कृषि के क्षेत्र में प्रतिवर्ष 4 प्रतिशत वृद्धि का लक्ष्य रखा है। नयी कृषि नीति का वर्णन 'इन्द्रधनुष क्रान्ति' के रूप में किया गया है, जिसमें सभी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से देश के कृषि क्षेत्र में विभिन्न क्रान्तियों जैसे– 'हरित क्रान्ति' (खाद्यान्न उत्पादन), 'श्वेत क्रांति' (दुग्ध उत्पादन), 'पीली क्रांति' (तिलहन उत्पादन), 'नीली क्रांति' (मत्स्य उत्पादन), 'लाल क्रांति' (मांस/टमाटर उत्पादन), 'सुनहरी क्रांति' (सेब उत्पादन), 'भूरी क्रांति' (उर्वरक उत्पादन), 'ब्राउन क्रांति' (गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत), 'रजत क्रांति' (अण्डे/मुर्गी) एवं 'खाद्यान्न श्रृंखला क्रांति' (खाद्यान्न/सब्जी/फलों को सड़ने से बचाना) को एक साथ लेकर चलना होगा, इसी को 'इन्द्रधनुषी क्रान्ति' कहा गया है।

(गजानदं सिंह)
सहायक महा प्रबंधक (उत्पादन)
निगमित कार्यालय

ज़िंदगी

ज़िंदगी के बहुमूल्य पल बन जाते हैं, लम्हे,
ज़िंदगी का गुजरा कल बन जाते हैं, लम्हे।
यादों के खजाने से निकल–निकल कर आते हैं,
वो लम्हे, लम्हा–लम्हा बेकरारी का लम्हा दे जाते हैं।।
गीली मिट्टी की सौंधी खुशबू से महक जाते हैं लम्हे,
पत्तों पर ओस की बूंद से ढुलक जाते हैं, लम्हे।
क्यूंकर सावन की पहली बारिश से बरस जाते हैं,
आंखों में फिर धुंआ–धुंआ से छलक जाते हैं, लम्हे।
जब कभी वक्त की कसौटी पर खरे उतर जाते हैं,
वो लम्हे, यादगारी के तब भी लम्हे दे जाते हैं।।

(मुकेश कुमार राय)
सहायक (मा.सं) ग्रेड–II
निगमित कार्यालय

अब्राहम लिंकन

अब्राहम लिंकन की बचपन

अब्राहम लिंकन का जन्म 12 फरवरी 1809 में केंटुकी के हार्डिन काउंटी में सिंकिंग स्प्रिंग फॉर्म नामक जगह में एक गरीब अश्वेत परिवार में हुआ था। अब्राहम लिंकन के माता पिता का नाम थॉमस और नैंसी हैंक्सस लिंकन था। अब्राहम के पिता थॉमस बेहद गरीब थे, थॉमस एक कृषक थे साथ में वो लकड़ी के समान भी बनाते यानी वो बढई भी थे। उनके पास बच्चों को पालने पोसने के भी पर्याप्त साधन नहीं थे।

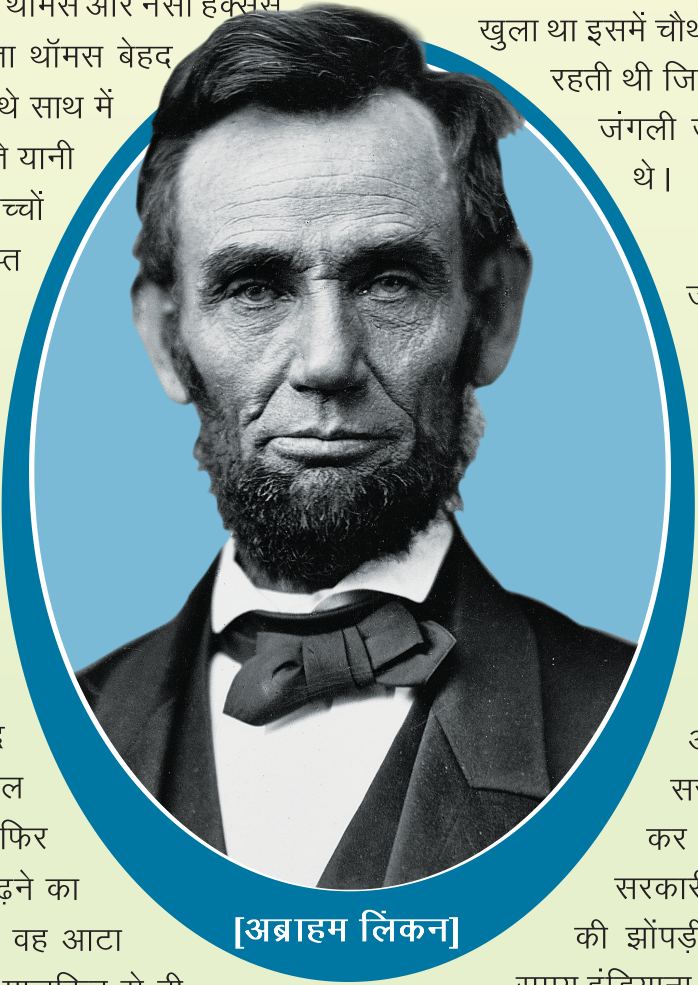

[अब्राहम लिंकन]

गरीबी के कारण अब्राहम लिंकन को बचपन में पढ़ने का अवसर नहीं मिल सका वह चक्की पर आटा पिसाने, घर की साफ सफाई करने, पानी भरने का काम करते थे तब उसकी उम्र 07 वर्ष थी पर लंबी कद काठी के कारण वह सात साल में ही हृष्ट पुष्ट दिखने लगे, फिर भी वह कहीं न कहीं कुछ पढ़ने का अवसर तलाश लेते थे और वह आटा पिसाने जाते तो वह चक्की मालकिन से ही कुछ अक्षर लिखना और कुछ गिनती सीखने लगे। कुछ चलते फिरते शिक्षकों से पढ़ लेते थे।

थॉमस लिंकन ने 200 एकड़ के फॉर्म हॉउस को खरीदा, पर ये जमीन विवादित थी, जिसके कारण उनको टाइटल सूट का मुकदमा झेलना पड़ा, जिसके कारण वो ग़रीब हो गए। वो हताश होकर उस जगह को छोड़ दिया और 1816 में उनका परिवार इंडियाना स्टेट में आकर रहने का निर्णय किया यह प्रदेश अधिक हरा भरा जंगल था और यहां शिकार के लायक जानवरों की भरमार थी, यहां पर एक जगह चुनकर और जंगल साफ किया लकड़ियों के गट्ठर को एकत्र करके एक अहाता बनाया जो तीन तरफ़ से बन्द था और चौथी तरफ़ से खुला था इसमें चौथी तरफ़ सदैव अग्नि जलती रहती थी जिससे घर गर्म रहता था और जंगली जानवर पास नही आ पाते थे।

शुरुआत में इन्होंने जंगली जानवरों का शिकार करके जीवन यापन शुरू किया पर धीरे—धीरे जंगल काटकर एक 160 एकड़ जमीन तैयार किया और इस जमीन का पट्टा अपने नाम ले लिया और इस ज़मीन के मूल्य का एक चौथाई भाग जो लागभग अस्सी डॉलर थी उसको सरकार के ख़ज़ाने में जमा कर दिया। इस जगह एक सरकारी जंगल था जहां वो काठ की झोंपड़ी बनाकर रहने लगे, उस समय इंडियाना एक गैर गुलाम क्षेत्र था।

इसी जगह अगले साल एक ऐसा रोग फैला जिसमें किसी विषाक्त जंगली पौधे के खाने से पशुओं का दूध विषाक्त हो गया, इसके फलस्वरूप अनेक लोग मर गए, जिनमें लिंकन की मां भी थी, पांच अक्टूबर 1818 को जब अब्राहम मात्र नौ साल के थे तभी उनकी माता का निधन हो गया। इससे लिंकन और उसकी छोटी बहन मुसीबत में पड़ गए उस आपात स्थिति में उनकी

बड़ी बहन सारा ने उनकी देखभाल की। इनकी बहन सारा की उम्र भी मात्र 11 वर्ष की ही थी। थोड़े दिन बाद उनके पिता थॉमस ने एक अन्य विधवा स्त्री से विवाह कर लिया, इस विधवा महिला के पहले पति से भी तीन बच्चे थे, जो उसके साथ आये, यह स्त्री गृह प्रबंध में अधिक होशियार थी। उसने थोड़े दिन में ही घर को सुव्यवस्थित कर दिया। वह अपने सगे बच्चों के साथ अपने सौतेले बच्चों को समान प्यार देती थी। उसने सारे बच्चों के स्कूल जाने और शिक्षा ग्रहण करने के इंतजाम कर दिए। अब्राहम लिंकन ने शुरुआत में चलते फ़िरते कुछ शिक्षकों से ज्ञान अर्जित कर लिया था। सौतेली होने के बाद भी इस महिला ने अब्राहम को भरपूर स्नेह प्यार दिया, जीवन जीने के लिए तैयार किया। अब्राहम लिंकन को सगी माता से भी ज़्यादा प्यार दिया।

अब्राहम लिंकन ने 17 वर्ष की आयु में एक नाविक की नौकरी कर ली जिसमें उनको 37 सेंट (जो एक रुपया के बराबर था), ये कार्य उसके लिए बहुत ही अनोखा था, दो साल बाद जब वह उन्नीस साल का हुआ तो उसने बड़े स्टीमर में नौकरी की और गांव से दूर न्यू ऑरलियन्स नाम के नगर में रहने लगा।

अब्राहम न्यू ऑरलियन्स के शहरी जीवन को देखकर हतप्रभ रह गया। वहाँ धनी लोग, आलीशान घर, वहां की चहल पहल देखकर वह आश्चर्य चकित हुआ कि क्या लोगों के पास इतना धन हो सकता है उसने वहां देखा कि फ्रांसीसी, पुर्तगाली, स्पेनिश मूल के लोग किस प्रकार काले ग़ुलामों से तम्बाकू, चीनी आदि के बोरे जहाजों पर चढ़वाते और उतरवाते हैं, यह गुलामी का दृश्य देखकर अब्राहम सिहर गया और उसी समय से दासता को ग़लत मानने लगा 1830 में अब्राहम के पिता इंडियाना को छोड़कर इलिनॉयस रियासत में जाकर बस गए, अब जब अब्राहम 21 साल के पूर्ण वयस्क हो चुके थे तब उन्होंने अपने पिता से अलग रहने का निश्चय किया, रोजगार की तलाश में एक बार फिर नाविक बनकर "न्यूऑरलियन्स" गया वहां से लौटकर इलियानस की एक बड़ी सी दुकान में नौकरी करने लगा, इसके बाद उसने शासन सभा में क्लर्क का काम किया, इससे राजनीति के संबंध में उसे कुछ जानकारी हो गई और 1832 में वह स्थानीय शासन–सभा के लिए उम्मीदवार हो गया पर उसे बुरी तरह हारना पड़ा। उसके बाद अब्राहम ने न्यू सालेम नामक स्थान में पोस्ट मास्टर का काम कर लिया, दो साल बाद फिर चुनाव हुए तब फिर से दुबारा शासन सभा के लिए उम्मीदवार बना, इसी समय अब्राहम का प्रेम एक" रेटजेल" नामक स्त्री से हो गया वह उस युवती से बहुत प्रेम करता था परंतु विवाह के पूर्व ही उस स्त्री का निधन हो गया। अब्राहम अपने बचे हुए समय में कानून का अध्ययन करता था, कुछ समय बाद अपने एक मित्र के साथ साझे में वकालत शुरू की। वकालत के कार्य में अब्राहम सदैव सत्य के साथ रहे जबकि वकालत को बेईमानी का धंधा माना जाता था, जो वकील जितनी झूठ और चालाकी से काम लेता था उसे जल्द सफ़लता मिलती थी।

अब्राहम लिंकन और वकालत का पेशा

अब्राहम को वकालत के धन्धे में सच का सहारा लेना अधिक सरल लगा जबकि उस समय प्रचलन में यही था कि जो वकील जितना अधिक झूठ बोले उसे उतनी ही अधिक सफ़लता मिलेगी। अब्राहम लिंकन अपने क्लाइंट से केवल नाम मात्र की फीस लेते थे, ज़्यादातर मामलों में वह दोनों पक्षों को अपने चैंबर में बुलाकर सुलह समझौते करवा देते थे, जिससे गरीब लोग मुकदमे बाज़ी के पचड़े में फंसकर अपना कीमती समय और जोड़े गए धन को खत्म न कर दें।

कहते है कि अब्राहम लिंकन किसी मामले में बीच में ही पैरवी करना छोड़ देते थे यदि उनको लगता था कि इस मुकदमे में कई कागज़ नहीं लगाए गए और उनको बनाने में फर्जी दस्तावेज प्रस्तुत किए गए हैं, जब उनकी आत्मा स्वीकार नहीं करती थी तब वह मुक़दमे को वहीं छोड़ देते थे। एक बार एक विधवा महिला के पेंशन दिलवाने के लिए उन्होंने मुफ़्त में मुकदमा लड़ा, इसी तरह दूसरे वाकया में उन्होंने अपने क्लाइंट का दस

डॉलर लौटा दिया क्योंकि मुकदमें की कार्यवाही में सिर्फ 15 डॉलर ही खर्च हुए थे।

कुछ ही समय में वकीलों ने उनके ईमानदारी के कार्य के कारण सम्मान देना शुरू किया। बहस के समय पूर्ण ईमानदारी और सच्चाई के कारण वह न्यायाधीशों के सामने निगाह में पूर्ण विश्वासपात्र बन जाता था। वह अपने तर्कों और विलक्षण बुद्धि से उसकी एक एक बात सामने खोलकर रख देता था। जज स्टीफ़न डगलस के कोर्ट में चले एक प्रसिद्ध मुक़दमे में उनके द्वारा प्रस्तुत की गई विभिन्न दलीलों को सुनकर जज ने भी उनके सच्चाई और न्यायोचित तथ्यों को स्वीकार किया, और लिंकन के प्रशंसक हो गए।

अब्राहम लिंकनः एक लीडर के रूप में

लिंकन अपने कद काठी से सामान्य थे उनके चेहरे पर झुर्रियां दिखाई देतीं थी, झुर्रियों से चेहरे में थकान दिखती थी। उस समय के दर्शकों के अनुसार लंबे कद का मुरझाए चेहरे वाला ये व्यक्ति जब बोलना शुरू करता था तो बोलते समय जो हरकत करता था उससे उसकी आकृति और बेढंगी हो जाती थी, उसके कपड़े ढीले ढाले लटकते हुए दिखते थे, उसके भाषण में एक सम्मोहन होता था उसके भाषण में कोई विद्वता और साहित्यिक शब्द नहीं पिरोए होते थे। परंतु जैसे—जैसे वह अपने विषय में लीन होता जाता था उसकी आवाज़ और चाल—ढाल बदलने लगती थी, उसके कुरूप व्यक्तित्व वाले स्वरूप में महान आदमी की झलक दिखने लगती थी, उसकी हर बात में गहराई झलकने लगती थी जो विपक्षियों को भी लुभाती थी। वह जन भावनाओं के अनुसार ऐसी अपील करता था जिससे लोगों के हृदय में जादू सा असर पड़ता था। उसकी आवाज़ गूँजने लगती और चेहरे पर एक ऐसी चमक सी पैदा होती जिससे सारे श्रोतागण उसकी बात को ध्यानपूर्वक सुनने के लिए विवश हो जाते। वह डेढ़—डेढ़ घण्टे तक अपने श्रोताओं को अपने भाषणों में बांध कर रख सकता था। उसके भाषण में सदैव सत्य का प्रतिबिंब दिखाई देता था।

लिंकन की राजनीति में सच्चाई

राजनीतिक जीवन में अब्राहम ने सदैव सत्य का ही सहारा लिया वह अपने भाषणों को तैयार करने में एक—एक शब्द में मित्रों से सलाह मशविरा करते थे। लिंकन ने 1858 के भाषण को अपने दस बारह मित्रों को पढ़कर सुनाया जिसमें दक्षिण के राज्यों को गणराज्य से अलग हो जाने की समस्या का जिक्र था राजनीतिक जीवन में उन्होंने सत्य का व्यवहार किया। लिंकन ने न्यूयार्क में जो भाषण दिया वहां के सारे समाचार पत्रकों के सारे संस्करण में प्रकाशित हुआ, इस भाषण में लिंकन ने स्पष्ट रूप से कहा दास प्रथा ग़लत है और जो इस प्रथा के समर्थक हैं उनसे किसी भी प्रकार की वार्ता करना निरर्थक है, राजनीति में अब्राहम लिंकन आत्मा की आवाज़ सुनकर सच्चाई के सिद्धांत का पालन करते थे।

जब राष्ट्रपति के चुनाव के लिए उनके मित्रों ने उन्हें तैयार कर लिया था, सामान्य नागरिकों को ये विश्वास नहीं था कि वो अपने गुणों से राष्ट्रपति चुनाव जीत लेंगे और कुछ यह कह रहे थे कि ये व्यक्ति सत्य का कट्टर समर्थक है बनावट से दूर है पर राष्ट्रपति के ओहदे में बैठने के बाद उस पद के अनुरूप कार्य संचालन नहीं कर पायेगा।

अब्राहम लिंकन का कहना था कि उन्होंने अपने मित्रों के कहने से राष्ट्रपति पद के लिए नामजद कर दिया है पर वह इस पद के लिए योग्य नहीं हैं क्योंकि आज के प्रजातंत्र में धन का बोलबाला है जो प्रजातंत्र के लिए घातक है।

अब्राहम लिंकन और उनकी पत्नी मेरी टॉड—

लिंकन का दाम्पत्य जीवन बहुत ही कष्टमय था, उनकी पत्नी मेरी टॉड ने उनके जीवन में उनके न चाहने पर भी प्रवेश किया और मेरी टॉड के कर्कश स्वभाव से लिंकन जीवन भर परेशान रहे, साथ में, ये भी कहा जाता है कि यदि मेरी टॉड ने उनके जीवन मे प्रवेश नहीं किया

होता तो अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति पद पर नहीं पहुंच पाते। 1842 में अमेरिकी राष्ट्रपति का विवाह मेरी टॉड से "स्प्रिंग फील्ड" नामक क़स्बे में हुआ था। लिंकन और मेरी टॉड की पहली मुलाकात 1939 में स्प्रिंग टॉड कस्बे में ही हुई थी। मुलाकातों का सिलसिला बढ़ा और फिर कुछ जान पहचान के बाद 1941 जनवरी के शुरुआत में दोनों की सगाई की बात चलने लगी। लिंकन के साथ मेरी टॉड की सगाई जनवरी 1941 में तय हुई पर सगाई होने से पूर्व लिंकन ने मेरी टॉड से विवाह की इस रश्म को तोड़ दिया क्योंकि लिंकन उसके चिड़चिड़े स्वभाव को जान गए थे। लिंकन चाहते थे कि वो महिला किसी अन्य व्यक्ति से शादी कर ले।

लिंकन के मित्र बताते हैं कि इस सगाई में ब्रेकअप के बाद लिंकन खुद को जिम्मेदार मानने लगे और अपराध बोध से ग्रसित थे, और इस दौरान वह अपने कोट में चाकू लेकर चलने लगे। जब उनके मित्रों को ज्ञात हुआतो चाकू लिंकन से छीन लिया। उनके मित्रों ने यह भी बताया था कि उस समय लिंकन को बार बार आत्महत्या के ख़्याल आते थे, वह पूरी तरह अवसाद ग्रस्त थे, वह इस सगाई संबंधी कोई चर्चा भी करना पसंद नहीं करते थे। उधर मेरी टॉड जो लिंकन से सगाई तोड़ने से निराश थी पर अपनी महत्वाकां को पूरा करने के लिए कुछ भी करने को तैयार थी क्योंकि उसकी बहन बताती थी उसको बचपन से ही चमक दमक, ऊंचे रहन सहन में रहना पसंद था, ऊंचे व्यक्तियों से मिलना जुलना पसंद था। वह बचपन से हवाई ख़्वाब देखती थी। मेरी टॉड अब लिंकन का साथ पाने को इसलिए बेताब थीं क्योंकि वह लिंकन की वाकपटुता से प्रभावित हो चुकी थी वह सगाई के समय हुई मुलाक़ात से जान चुकी थी कि लिंकन भले नैन नक्श से कुरूप लागते हों पर अपनी बुद्धिमत्ता से यह राष्ट्रपति की कुर्सी तक पहुंच सकता है।

इसके पूर्व अपनी महत्वाकांता को भुनाने के लिए मेरी टॉड लिंकन के राष्ट्रपति पर के प्रतिद्वंदी स्टीफ़न डगलस से मिल चुकी थी और स्टीफ़न डगलस ने शुरुआती मुलाकात के बाद मेरी टॉड से विवाह का प्रस्ताव भेजा, मेरीटॉड झट से इस विवाह को तैयार हो गई पर जब अपने मित्रों चिर परिचितों से ज्ञात हुआ कि मेरी टॉड नकचढ़ी और अति महत्वाकांता रखने वाली स्त्री है तो उसने जल्द इस रिश्ते को अस्वीकार कर दिया और विवाह से इनकार कर दिया। स्टीफ़न डगलस के इस विवाह प्रस्ताव के रद्द होने से मेरी टॉड की महत्वाकांता को गहरा धक्का लगा, और अब मेरी टॉड स्टीफ़न डगलस से बदले की आग में जलने लगी। इसको पूरा करने के लिए वह उसके प्रतिद्वंदी अब्राहम लिंकन को हर हाल में हासिल करके स्टीफ़न डगलस को नीचा दिखाना चाहती थी।

स्टीफ़न डगलस से बदला लेने के लिए टॉड ने एक दिन लिंकन के मित्रों के माध्यम से लिंकन को अपने घर बुलाया, टॉड के घर में लिंकन मित्रों के समझाने पर पहुंचे, वहां पर टॉड बहुत रोई मेरी टॉड के आँसूओं को बहते देखकर लिंकन को दया आ गई और उसने उसके साथ विवाह की सहमति बिना मन के दे दी।

अब लिंकन के जीवन के दु:ख भरे पन्ने भरने लगे, इस कहानी को लिंकन के मित्र हैड्रॉन ने अपनी एक किताब में वर्णित किया है। हैड्रॉन ने लिंकन के साथ 20 साल तक साथ में रहकर वकालत की थी, इसलिए वह लिंकन के स्वभाव की रग रग से वाकिफ़ थे, उन्होंने लिखा है कि जिस दिन लिंकन ने विवाह किया वही दिन उनकी खुशी का आख़िरी दिन था, हैड्रॉन ने बताया कि मेरी टॉड नकचढ़ी, बात बात में गुस्सा करने वाली महिला थी। हेड्रान ये भी लिखते हैं कि मेरी टॉड अपने फ्रेंड्स के बीच कहा करतीं थी कि वह उस व्यक्ति से शादी करेंगी जो अमेरिका का राष्ट्रपति बनेगा, उसकी इस बात का उसकी सहेलियां मज़ाक उड़ाती थीं।

इसी तरह एक अन्य घटना का जिक्र हेड्रान ने किया है कि जब विवाह होने के बाद लिंकन और टॉड किरा, के मकान में रहने गए, तब उस मकान की मकान मालकिन ने एक दृश्य अपने आंखों से देखा और बताया कि लिंकन की पत्नी एक बार सुबह नाश्ते की मेज पर बैठी थी, तब किसी बात पर मेरी टॉड का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया, उसने आव देखा न ताव तुरंत

गर्म चाय के प्याले को लिंकन के चेहरे पर दे मारा, जिससे लिंकन अचानक सकपका गए पर बिल्कुल शांत बैठे रहे और कुछ नहीं बोले और उन्हें कोई गुस्सा नहीं आया।

अमेरिकी लेखक कार्नेगी बताते हैं कि उसके बेरुखे स्वभाव के कारण लिंकन के पड़ोसी, दोस्त, रिश्तेदार उसके घर नहीं आते थे, यहाँ तक कि लिंकन की सौतेली माता जो सिर्फ 20 मील दूर रहती थी वह भी मेरी टॉड के कर्कश स्वभाव के कारण लिंकन से मिलने कभी उसके घर नहीं आई।

इसी तरह अमेरिकी लेखक डेल कार्नेगी लिखते हैं कि शादी के कुछ दिनों बाद मेरी टॉड अपने पति लिंकन पर बहुत चीखती चिल्लातीं थीं, वह लिंकन के पहनावे और अस्त व्यस्त कपड़ों से बहुत चिढ़ती थीं, मेरी को लिंकन के शारीरिक फीगर में भी कमियाँ दिखतीं थी, मेरी हमेशा लिंकन के बाहर निकले कान, लटके होंठ, लटकते गाल की खाल, लंबे हाँथ और पैर, छोटे सिर जो उसके लम्बे साढ़े छै फ़ीट के शरीर की तुलना में छोटा सा दिखता था, इन सब शारीरिक अंगों पर कुछ न कुछ कमेंट मेरी करती ही रहती थी, मेरी जो एक बड़े घराने की महिला थी उसको भले ये सब बुरा लगता हो पर लिंकन को अत्यधिक सरल और सादा जीवन ही पसंद आता था।

दक्षिणी रियासतों से समझौते का प्रयत्न

अमेरिकन राजनीति बहुत समय तक दो दलों में बंटी रही डेमोक्रैट और दूसरा रिपब्लिक। रिपब्लिकों में अमेरिका का बुद्धिजीवी और डेमोक्रेटिक वर्ग सम्मिलित है और डेमोक्रैट में अधिकांश परंपरावादी और किसान हैं। यद्यपि देश में प्रायः डेमोक्रेटस का बहुमत रहने से उनमें शासन सत्ता अधिक रहती है, फिर जब किसी बड़े सिद्धान्त के ऊपर जनमत अनेक हिस्सों में बँट जाता है तो रिपब्लिकन की प्रधानता हो जाती है, लिंकन जब राष्ट्रपति बने थे उस समय भी ऐसा ही हुआ, दासप्रथा और गणराज्य की एकता के नाम पर उत्तर और दक्षिण डेमोक्रैट में तीव्र मतभेद हो गया, इससे उनकी तरफ़ से एक के बजाय, दो उम्मीदवार खड़े कर दिए गए, इस आधार पर रिपब्लिकन पार्टी की जीत हुई और लिंकन राष्ट्रपति बने। यदि ये संयोग नहीं मिलता तो शायद लिंकन राष्ट्रपति पद को नहीं प्राप्त कर पाते।

वास्तव में अमेरिकी जनता ने राष्ट्रपति इसीलिए बनाया था क्योंकि लिंकन के अंदर मुख्य गुण यह था कि वह अपने सिद्धांतों में पूर्ण रूप से दृढ़ रहने वाला कर्तव्यपरायण व्यक्ति था। इस समय अमेरिका में संकट था। अमेरिकी गणराज्य के दक्षिणी प्रान्त जो कपास और गन्ने जैसी खेती करते थे वहां पर इन खेतों में काम करने के लिए दशकों पहले अफ्रीका से नीग्रो प्रजाति के व्यक्तियों को लाकर इस श्रम वाले कार्यों में खपाया गया, इनके अधिकार छीन लिए गए थे ये अपने मालिक के गुलाम होते थे, इन गुलाम के बीबी बच्चों पर भी मालिक का ही अधिकार होता था, गुलामों से अत्यधिक मेहनत कराई जाती थी और सिर्फ खाने कपड़े का इंतज़ाम ही किया जाता था, नीग्रो गुलाम यदि अत्यधिक प्रताड़ना से बचने के लिए भाग जाता था तो उसे फिर से घसीटकर वापस लाया जाता था और काम पर लगाया जाता था। गुलामों को इस अत्याचार से बचने के लिए अमेरिका में अभी तक कोई क़ानून नहीं था।

इधर जब 1960 में अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार लिंकन की जीत हुई तब से दक्षिणी राज्यों को लग रहा था कि अब दास प्रथा खत्म हो जाएगी क्योंकि लिंकन दास प्रथा को खत्म करने को संकल्पित थे। अब दक्षिणी राज्यों को लगा कि उनके अधिकार संघीय सरकार द्वारा छीन लिए जाएंगे।

इस प्रकार दक्षिणी राज्यों ने संघीय भावना की उपेक्षा की और दक्षिणी राज्यों ने संघ से अलग होने की घोषणा कर दी। 20 दिसंबर को दक्षिणी कैरोलिना ने संघ से पृथक होने की घोषणा की इसी प्रकार मिसिसिपी, जॉर्जिया, फ्लोरिडा अलबामा, लुसियाना, टेक्सास ने संघ से पृथक होकर अपना एक परिसंघ बना लिया और जेफरसन डेविस को अपना राष्ट्रपति नियुक्त किया। दक्षिणी के राज्यों द्वारा खुद अलग कर लिए जाने पर ये प्रश्न उठने लगा कि क्या दक्षिणी राज्यों को संघ से अलग

हो जाने का अधिकार है, लिंकन ने राष्ट्रपति पद पर निर्वाचन के पश्चात स्पष्ट रूप से घोषणा की कि संयुक्त राज्य अमेरिका का यूनियन अखण्डनीय है। किसी भी राज्य को यूनियन से अलग होने का कोई अधिकार नहीं है।

लिंकन अंतिम समय तक कोशिश करते रहे कि दक्षिण वालों से संघर्ष न किया जाए और दास प्रथा के प्रश्न को अभी यथावत रहने दिया जाए। लिंकन ने इस समझौते में कभी बाधा डालने की कोशिश नहीं की, उसने शासन सभा को इस बात का पूरा मौका दिया, कि वो समस्या का कोई ठीक हल निकालकर, समझौते का मार्ग प्रशस्त करें, इसके लिए सीनेट के तेरह सदस्यों की एक कमेटी बना दी, जो कई महीनों तक परिश्रम करती रही। पर जब दक्षिण के नेता उग्र रूप धारण करने लगे तब तो लिंकन ने यह सम्मति दी कि हम सब लोग इस मसले पर अधिक झुकेंगे तो दासप्रथा और उसकी बृद्धि का आंदोलन पूरे वेग से फट पड़ेगा। 04 मार्च 1861 को शपथ ग्रहण समारोह में उन्होंने कहा कि– "मेरे असंतुष्ट देश वासियों! गृह युद्ध का निर्णय मेरे हाथ में नहीं है बल्कि आपके हाथ में है। सरकार आप पर आक्रमण नहीं करेगी, हम लोग शत्रु नहीं बल्कि मित्र हैं, भले ही हमारी भवनाओं में तनाव पैदा हो जाय, पर इसका अर्थ ये नहीं कि हमारे संबंध टूट जाएंगे।" लिंकन ने देश की अखंडता को बनाये रखने के लिए अलगाववादी शक्तियों का विरोध अवश्य किया परंतु व्यवहार में कटुता और बदले की भावना कभी नहीं आने दी।

इसी के साथ गृह युद्ध की शुरुआत हो गई दक्षिणी कैरोलिना ने सुमटर के किले में बम फेंक दिया। उत्तरी राज्यों के संघ को यूनियन या पैंकी की संज्ञा दी गई थी। दक्षिणी राज्यों के संघ को कंफेडेरेसी या 'रेबल' या 'डिक्सी' कहा गया। दक्षिणी राज्य दास प्रथा को बनाये रखने के लिए युद्ध लड़ रहे थे जबकि उत्तरी राज्य पूरे अमेरिकी संघ को विघटन से बचाने के लिए युद्ध लड़ रहे थे।

इसी बीच 22 सितंबर 1862 को लिंकन ने एक ऐसा कदम उठाया जिससे घर और बाहर के सब लोग चौंक गए, और उसकी सबसे बड़ी प्रतिज्ञा पूरी हो गई, उसने एक ऐसे घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए जिसके मुख्य शब्द थे– "1863 कि प्रथम जनवरी के दिन वो सभी दास जो किसी भी राज्य अथवा ऐसे किसी भी राज्य की भूमि में जो उस समय संयुक्त राज्य अमेरिका के विद्रोही हों, इसी समय तथा इसके बाद सदा के लिए स्वतंत्र होंगे।"

युद्ध के समय में सेना के सर्वोच्च अधिकारी की हैसियत से युद्ध कार्य के रूप में इस आदेश को जारी किया। उपर्युक्त दास क़ानून की समाप्ति न ही राष्ट्रपति खत्म कर सकते थे, न ही केंद्रीय शासन सभा खत्म कर सकती थी पर युद्ध और आपातकाल में राष्ट्रपति को ऐसे क़ानून बनाने का अधिकार मिल जाता था, उसी का लाभ राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने उठाया, इस कानून के द्वारा ही विद्रोहियों की सम्पति छीन लिए गए। उसी तरह उनकी बड़ी धन सम्पति, दास भी छीन ली गई। इस राजाज्ञा का फल यह हुआ कि दक्षिणी राज्यों के आवश्यक उद्योग धंधों की आवश्यक श्रम शक्ति निकल गई और युद्ध का अंत होते होते एक लाख अस्सी हजार हब्सी सैनिकों ने गणराज्य के सपोर्ट में हथियार उठा लिए और दक्षिण के जिन जीते हुए स्थानों के लिए गोरी सेना नहीं थी उन जगह हब्सी तैनात कर दिए जाते थे, लिंकन के अनुसार ये कानून ऐसा महत्वपूर्ण कार्य था जिसके बिना युद्ध समाप्त नहीं किया जा सकता था।

अब इस कानून से पासा पलट गया। युद्ध का नक्शा ही बदल गया। गणराज्य की सेनाओं को बहुत बड़ी सहायता मिल गई। अमेरिका में उस समय तक अधिक संख्या में बफर सेना तैयार रखने का प्रचलन नहीं था। इसलिए जब युद्ध छिड़ गया तो केंद्रीय सरकार के पास कुल सोलह हज़ार की सेना थी पर दक्षिण ने उसी समय दो–तीन लाख सैनिक भर्ती कर लिए थे, इसलिए लिंकन ने फौजी स्वयं सेवकों को भर्ती किया। पुराने सैनिक जिनको किसी न किसी प्रकार की सजा मिल चुकी थी उनकी सजा को माफ़ कर फिर से युद्ध के मोर्चे पर भेज

दिया इस तरह तीन लाख के करीब स्वयं सेवक सेना में सम्मिलित हो गए पर योग्य सेना नायक का आभाव था क्योंकि अभी तक का योग्य सेनानायक रोबर्ट ली था पर जब दक्षिणी राज्यों से लड़ने के लिए गणराज्य की तरफ़ से सेनानायक नियुक्त करने के लिए कहा गया तो उसने युद्ध से इनकार कर दिया और वह अपने निवास स्थान वर्जिनिया चला गया और वहां की सेना का संचालन करने लगा। इसी तरह, अन्य सेनापति भी जनरल रोबेर्ट ली से मिल गए सभी ने युद्ध से इनकार कर दिया। चूँकि लिंकन खुद सेना के बारे में अधिक अनुभव नहीं रखते थे इसलिए उनको बार–बार कई सेनापति बदलने पड़े। अंततोगत्वा ग्रांट को चुना गया लिंकन ग्रांट की योग्यता को पहचान चुके थे उन्होंने ग्रांट को युद्ध जीतने की पूरी छूट दे दी, लिंकन ने ग्रांट की लगातार हौसला अफजाई की। हर तरह की मदद और प्रोत्साहन दिया हालांकि कुछ नेताओं ने ग्रांट के खिलाफ लिंकन के कान भरने की कोशिश की पर लिंकन ने सभी आलोचकों को नजर अंदाज कर दिया। ग्रांट के युद्ध कौशल से सेना में उत्साह बढ़ गया और ग्रांट ने कुछ दिनों में ही दक्षिण के कई राज्यों को शिकस्त दी।

ये युद्ध चार साल तक चलता रहा जब तक दक्षिणी स्टेट में युद्ध करते करते अपनी हार नहीं मान ली। इस युद्ध में बहुत बड़े पैमाने पर नर संहार हुआ और अरबों की संपति नष्ट हुई। अमेरिका के करीब छः लाख सैनिक मारे गए।

राष्ट्रपति पद के समय क्षमा कार्य

राष्ट्रपति पद के दौरान उनको तकलीफें भी झेलनी पड़ी। उनके साथ रहने वाले तीसरे पुत्र बिली की 1962 में मृत्यु हो गई जिससे वह बहुत दुःखी हुए लिंकन की पांच संतानें हुई। उनमें तीन की मृत्यु पहले ही हो गई और दो की मृत्यु राष्ट्रपति भवन में हुई। यद्यपि वह एक पुत्रवत्सल पिता थे पर वह राजनीतिक कार्यों में इतना अधिक व्यस्त रहते थे कि बच्चों की अधिक देखभाल नहीं कर सके। इस कारण ही उनकी पत्नी व उनमें अंतिम समय में अनबन बनी रही।

राष्ट्रपति बनने के बाद उनके सभी चाहने वाले, उनके मित्र, उनके पूर्व परिचित उनसे मिलने रोज आते थे। कुछ लोग उनके व्यक्तिव से प्रभावित होकर आते थे तो कुछ लोग कोई नौकरी पाने की लालसा से या सरकारी सहायता की लालसा से आते थे, लिंकन गरीबों से बहुत हमदर्दी रखते थे जब कोई दूर गांव देहात से सैकड़ों किलोमीटर चलकर उनसे मिलने आता था तो लिंकन उनसे प्रेम और सद्भाव से मिलते थे उनकी पूरी कठिनाइयों को सुनते थे और निवारण के लिए भी कदम उठाते थे। इन्ही सभी गुणों के कारण लिंकन देशवासियों के बीच में प्रिय थे।

लिंकन जितने दिन अमेरिकी राष्ट्रपति थे उतने दिन तक गृहयुद्ध चलता रहा, लिंकन के पास रोज सैनिक अदालतों द्वारा जिन सैनिकों को सजा सुनाई जाती है उनके क्षमा याचना के लिए प्रार्थना पत्र आते थे, लिंकन इन प्रार्थना पत्रों में एक सप्ताह विचार करते थे। लिंकन ज़्यादातर सैनिकों को माफ कर देते थे। ये वो सैनिक थे जिनको सेना की नौकरी के दौरान लापरवाही करने पर मौत की सजा दी गई थी, लिंकन ने कई सैनिकों को मौत की सजा माफ करने के बाद लड़ाई के लिए भेज दिया और ये सैनिक गणराज्य के लिए युद्ध करते–करते शहीद हो गए।

राष्ट्रपति का पुनर्निर्वाचन

युद्ध चार साल तक खिंच गया लिंकन के चार साल युद्ध की व्यवस्था में ही खप गए, लिंकन ने इसके लिए अपने स्वास्थ्य की परवाह नहीं कि अपने परिवार का ध्यान नहीं रख सके, वह दासता उन्मूलन के लिए और गणराज्य को टूटने से बचाने के लिए कटिबद्ध थे इसके लिए वह कुछ भी दांव पर लगाने को तैयार थे, मार्च 1964 तक कि स्थिति यह थी कि उत्तर की सेनाएं दक्षिण के विद्रोहियों को ज़्यादा परास्त नहीं कर पाईं थीं। अभी भी कई राज्य और बड़ा हिस्सा विद्रोहियों के चंगुल में ही था, यद्यपि जनता जानती थी कि युद्ध में विजय गणराज्य की ही होगी विद्रोही पराजित होंगे, परंतु यह युद्ध लंबा चलता रहा तो जनता भी अब ऊब चुकी थी। बहुत ज्यादा

सैनिकों ने बलिदान दे दिया था जनता फिर से शांति चाहती थी।

1864 में राष्ट्रपति का कार्यकाल पूरा होने के बाद नए राष्ट्रपति का निर्वाचन होना था, चूंकि इस बार विपक्षी दल डेमोक्रेटिक पार्टी ने मैक्नील को अपना उम्मीदवार बनाया, और मैक्नील एक वीर सेना संचालक था और राजनीति का भी माहिर खिलाड़ी था इसलिए डेमोक्रैट अपनी जीत देख रहे थे। डेमोक्रैट द्वारा सेना अफसर को उम्मीदवार बनाये जाने पर रिपब्लिकन पार्टी के अंदर भी रस्सा कसी शुरू हो चुकी थी, रिपब्लिकन सदस्य लगातार लिंकन को युद्ध में दक्षिणी राज्यों से संधि वार्ता के लिए कह रहे थे पर लिंकन हर बार चुप हो जाते थे इसलिए कई रिपब्लिकन सदस्य लिंकन को "रक्त पिपासु" कहकर भी अपमानित करने की और उन्हें तानाशाह बताने की कोशिश कर रहे थे। लिंकन जैसे दयालु और सहृदय व्यक्ति पर ये बहुत नीचता पूर्ण आक्षेप था पर लिंकन संकल्प बद्ध थे, उन्होंने आलोचकों के मुंह पर तब ताला लगा दिया जब एक–एक लेटर दिखाया जिसमें दक्षिण के विद्रोही नेता जेफरसन डेविस ने कोई भी संधि वार्ता करने से इनकार कर दिया था जेफरसन ने कहा था या तो दक्षिण के राज्य आज़ाद होंगे या मिट जाएंगे। लिंकन गणराज्य की रक्षा के लिए संकल्पबद्ध थे।

रिपब्लिकन नेताओं ने अपनी पार्टी के नए उम्मीदवार का शिगूफा छोड़ा क्योंकि मैक्नील जो डेमोक्रैट पार्टी का उम्मीदवार था वह सेनानायक रह चुका था इसलिए रिपब्लिकन पाटी में भी लिंकन की जगह दूसरे को उम्मीदवार बनाने की बात कही इसके लिए सेनानायक जनरल ग्रांट की सहमति बनी, जब जनरल ग्रांट को इस बात की जानकारी मिली तो वह बहुत क्रोधित हुए, जनरल ग्रांट जानता था कि उसे सेनानायक तब तक रहना है जब तक दक्षिणी राज्यों से युद्ध में पूर्ण विजय न मिल जाये और अखंड गणराज्य मिल सके, क्योंकि उस समय यदि वो हट जाता तो उत्तरी राज्य युद्ध हार जाते, इसके अलावा ग्रांट लिंकन से प्रभावित था जिन्होंने हर पल उसको साहस और ऊर्जा से भरा हर तरह की सहायता की। लिंकन जानते थे कि जब तक विद्रोहियों को पूरी तरह कुचल नहीं दिया जाएगा तब तक गणराज्य सुरक्षित नहीं है।

कुछ समय बाद समय बदला लिंकन के नाम की दुबारा सिफारिश की गई और वह दुबारा रिपब्लिकन के उम्मीदवार बनाये गए और लिंकन ने डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार मैक्नील से बहुत ज़्यादा अंतर से जीत हासिल की और दुबारा लिंकन की राष्ट्रपति पद में ताजपोशी हुई।

लिंकन ने अमेरिका को एक मजबूत संघ बनाने के लिए प्राणों की आहुति दी

अब्राहम लिंकन में 4 मार्च 1864 को दुबारा राष्ट्रपति का पद ग्रहण किया, इस शपथ ग्रहण करने के एक महीने बाद दक्षिण राज्यों की सेनाओं ने अमेरिकी गणराज्य के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, इस विजय के उपलक्ष में वाशिंगटन में 14 अप्रैल को फोर्ड थिएटर पर अवर अमेरिकन कज़िन नामक नाटक का मंचन किया गया, इस नाटक को देखने के लिए लिंकन अपनी पत्नी के साथ गए, इसी नाटक के दौरान दक्षिण राज्य वर्जिनिया का रहने वाला जॉन विल्किस बूथ, जो लिंकन के दासता विरोधी कानून से असंतुष्ट था, वह एक प्रसिद्ध रंगकर्मी भी था उसने चोरी छिपे लिंकन के पास पहुंचकर गोली मार दी। गोली लिंकन के सिर में लगी उस समय रात का 10:15 बजे थे। प्रातः 7:22 बजे अस्पताल में लिंकन का निधन हो गया।

उनकी मृत्यु के बाद उनकी महानता के किस्से सुनाए जाने लगे, उन्होंने अपनी मृत्यु के साथ अमेरिकी संघ को इतना मजबूत बना दिया कि वो अभी भी अभेद्य है। साथ में, अमेरिका के दासों की स्वतंत्रता के घोषणा पत्र में ऐसी मुहर लगाई जिसे बाद की आने वाली सरकारें भी नहीं बदल सकतीं थीं।

(मोहित कुमार गुप्ता)
प्रयोगशाला सहायक ग्रेड-V
केंद्रीय राज्य फार्म, सूरतगढ

आठवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून, 2022) की झलकियां

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (08 मार्च, 2022) की झलकियां

निगम मुख्यालय के स्थापना दिवस की झलकियां

क्योंकि मैं एक बीज हूँ

जिस धरती मॉं ने जन्म दिया,
मैं धरती पुत्र कहलाता हूँ।
अनजानों की उस दुनिया में,
लव–जिहाद का प्रतीक बन जाता हूँ।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

शादी की शोभा बढ़ाता मैं
कभी गले हार बन जाता हूँ।
जो प्यार करें इस दुनिया में,
मैं खुद कुर्बान हो जाता हूँ।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

कितना भी बढिया काम करूँ,
जन्म–मरण में साथ देता हूँ।
जो प्यार करें मेरे तनमन से,
उन कदमों में बिछ जाता हूँ।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

कभी फूल बनूँ कभी वृक्ष बनूँ,
कभी अन्न–दाता बन जाता हूँ।
जो ऐतवार करे मेरे जीवन पर
मैं पशु आहार बन जाता हूँ।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

मैं जन्म देता उन पौधों को,
जो हरियाली बन जातें हैं।
मैं सबकी भूख मिटा करके,
खुद भोजन बन जाता हूँ।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

नारी की शोभा तब से करूँ,
कभी गजरे का फूल बन जाता हूँ।
जो नर–नारी प्यार करें मुझसे,
मैं वरमाला बन जाता हूँ।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

मैं जाति–धर्म का न भेद करूँ,
मैं सर्वव्यापी हो जाता हूँ।
जिसने चाहा मुझे ह्दय से,
हर व्यक्ति की मॉंग बन जाता हूँ।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

मैं छत देखूँ न, ऑंगन देखूँ,
न शर्म करूँ खेत–खलियानों की।
जो मिट्टी मुझसे प्यार करें,
मैं उसका लाल बन जाता हूँ।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

मेरा दोष यही है सबसे बड़ा,
कि जग में पहचान बनाऊँ मैं।
जैसा ही मुझको बोएगा,
वैसा ही बीज बनाऊँ मैं।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

एक दाने से मैं एक बीज बनूँ,
इस जग में संसार बसाऊँ मैं।
ना फ्रिक करूँ उस आपदा की,
जिसमें खुद ही मिट जाऊँ मैं।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

जिस निगम ने मेरा सम्मान किया,
उस निगम का मान बढ़ाऊँ मैं।
जो फैला है पूरे भारत में,
उसका स्वाभिमान बढ़ाऊँ मैं।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

कानूनों की इस बस्ती में,
मैं बीज रक्त बन जाता हूँ।
जो दुर्व्यवहार करें मेरे ऑंचल से,
मैं सजा–पात्र बन जाता हूँ।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

मानव की संरचना मैंने करी,
उस प्रकृति का उपहार बना।
जो कर्म कर तुने जीवन में,
खुद उनका भागीदार बना।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

छोटे से छोटा दाना हूँ,
संसार में संघ बनाता हूँ।
वो डाले मुझको कोल्हू में,
मैं तेल बनकर आता हूँ।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

कितना भी बड़ा हो जाऊँ मैं,
आकाश को छूना पाऊँगा।
जब तपन पड़े उस सूरज की,
धरती पर छाया बन जाऊँगा।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

मानों तो गंगा जल हूँ मैं,
ना मानों बहता पानी।
ना मानो बहता पानी,
जो अलफाज पढ़े इस कविता के,
न कभी बने मनुष्य अभिमानी।।
''क्योंकि मैं एक बीज हूँ।''

(अरूण कुमार बी)
सहायक प्रबंधक
(उत्पादन) बागवानी
केंद्रीय राज्य फार्म,
रायचूर

बादल की पुकार

बादलों ने हवा से कहा
क्यों बरस जाए धरती पर हम।
इंसानों की हरकतों से वातावरण
में छाया है उदासी का गम।

नदियों में मिला कर जहर पानी के लिए तरसने लगे
पेड़ों को उजाड़ कर गर्मी से जुलसने लगे
जब खुद करने लगे सब क्यों बरसे अब के सावन हम।

बादलों ने हवा से कहा
क्यों बरस जाए धरती पर हम।

छलनी किया धरती को जिस को मॉ कहते थे
कागज के फूलों से खुशियां मनाने लगे
ऐसे खुदगर्ज इंसान को क्यों ठंडक दें हम।

बादलों ने हवा से कहा
क्यों बरस जाए धरती पर हम।

स्वर्ग बनाना था धरती को चमन की खुशबू से
पेड पहाडों को सजाया था कुदरत ने अपने हाथों से
कमी रही बस इंसानों को समझने की
लालच में आसानी से स्वर्ग को नरक बनाने लगे हरदम।

बादलों ने हवा से कहा
क्यों बरस जाए धरती पर हम।
इंसानों की हरकतों से वातावरण
में छाया है उदासी का गम।

(मीना रैना)
पर्यवेक्षक (मा.सं.)
निगमित कार्यालय

गीत–बीज पर

आई रिमझिम की बरसात
मैं बीज खरीदन जाऊँ।
मैं बीज खरीदन जाऊँ
या फार्म–सोना खरीदन जाऊँ।।
आई रिमझिम की बरसात, मैं बीज खरीदन जाऊँ।
कभी भूरे बादल आवें
कभी काले बादल आवें।
यो तो घन–घोर करे बरसात
मैं बीज खरीदन जाऊँ।।
आई रिमझिम की बरसात, मैं बीज खरीदन जाऊँ।
रामू भी बीज खरीदे
शामू भी बीज खरीदे।
वो बाजार से बीज खरीदे
या निगम से बीज खरीदे।।
उन्हें खुद पर नहीं विश्वास,
मैं बीज खरीदन जाऊँ।
आई रिमझिम की बरसात, मैं बीज खरीदन जाऊँ।
राज्य सरकार की बीज बनावें,
निजी कंपनी बीज बनावें।
राष्ट्रीय निगम भी बीज बनावें
बीज उत्पादक बीज बनावें।।
ये है प्रतिस्पर्द्धा का अभाव,
मैं बीज खरीदन जाऊँ।
आई रिमझिम की बरसात, मैं बीज खरीदन जाऊँ।
जो गुणवत्ता बीज बनावें।
वो अधिक अन्न उपजावें।।
जो कृषक खेती करवावे।
जीवन में खुशहाली लावें।।
उन्हें ऐसा दो वरदान, जो निगम बीज अपनावें
आई रिमझिम की बरसात, मैं बीज खरीदन जाऊँ।

(आनंद कुमार)
सहायक (बागवानी) ग्रेड-I
केंद्रीय राज्य फार्म, सूरतगढ़

सहायता

खुद को बेहतर बनाने में इतना समय दीजिए कि किसी बेकार काम के लिए आपके पास समय ही न बचे।

आपका समय आपके लिए –

- आप हर किसी की सहायता नहीं कर सकते है, लेकिन जो आपके सामने है आप उसकी सहायता जरूर कर सकते है।
- एक बार बहुत सारी मछलियां समुद्र के किनारे पर पानी से बाहर आ गई और पानी के बिना तड़पने लगी. एक युवक मछलियों को उठा–उठा कर समुद्र के पानी में फैंकने लगा तो पास खड़े एक व्यक्ति ने कहा कि तुम्हारे ऐसा करने से कोई फायदा नहीं है क्योंकि इतनी सारी मछलियों को बचाना सम्भव नहीं है।
- उस व्यक्ति को युवक ने बड़ा ही सुंदर जवाब दिया. शायद मैं हर मछली की जिंदगी नहीं बचा सकता, लेकिन उस मछली का जीवन तो मेरी वजह से बच जायेगा जिसे मैं पानी में डाल रहा हूँ।
- रोजमर्रा की जिंदगी में भी ऐसा ही होता है, शायद हम हर किसी की मद्द नहीं कर सकते है लेकिन हम जिसकी मद्द करेंगे कम से कम उसकी जिंदगी में तो फर्क पड़ेगा न....
- जो व्यक्ति बुरे समय में आपकी मद्द करने से नहीं कतराता है, वही व्यक्ति सच्चा रिश्तेदार या जीवनसाथी होता है।
- किसी की मद्द कीजिए, लेकिन इस बात का ढिंढोरा मत पीटिए।
- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए हमें एक–दूसरे की मद्द की जरूरत पड़ती रहती है।
- वही व्यक्ति दूसरों की मद्द कर सकता है, जिसे दूसरों के दर्द का एहसास हो।
- हर किसी से मद्द ले लीजिए, लेकिन कभी भी किसी बुरे व्यक्ति से मद्द मत लीजिए।
- इस भागदौड़ भरी जिंदगी में किसी की मद्द करने का वक्त किसी के पास नहीं है लेकिन एक–दूसरे के मामलो में टांग अड़ाने का समय सबके पास होता है।
- भगवान भी उसी व्यक्ति की मद्द करते हैं, जो व्यक्ति खुद अपनी मद्द करने की कोशिश करता है।
- ज्यादातर मामलों में आप खुद अपनी मद्द कर सकते हैं, आपको दूसरों के मद्द की जरूरत बहुत कम समय होती है।

(राजकुमार वर्मा)
सहायक (मा.सं) ग्रेड–I
निगमित कार्यालय

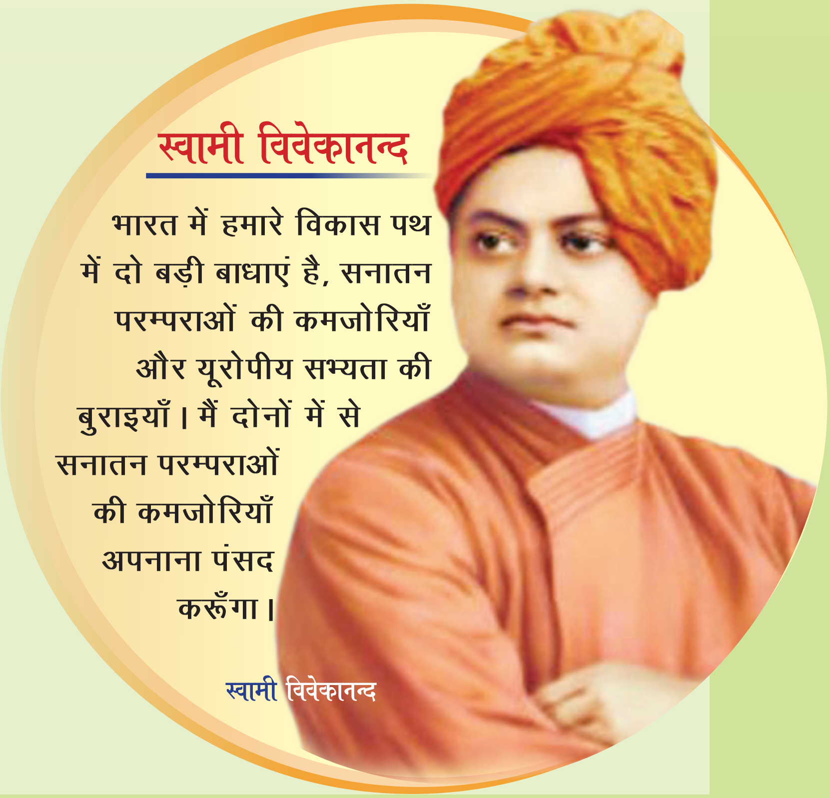

स्वास्थ्य और व्यायाम

संसार में मनुष्य अनेक प्रकार के आनंद पाना चाहता है। उसके लिए सुंदर मकान, रूचिकर भोजन और आकर्षक वस्त्रों की इच्छा हमेशा बलवती रहती है। धन, घर तथा अन्य भौतिक वस्तुएं उसके सुख के साधन हैं। सभी सुखों का मूल है– शरीर–सुख। सर्वप्रथम शरीर, इसके बाद और कुछ। यदि शरीर स्वस्थ नहीं हो सारा वैभव व्यर्थ है। स्वास्थ्य का ठीक रहना सब प्रकार की संपति प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। सुख का आधार है–स्वास्थ्य। एक रोगी को राजमहल में नींद नहीं आ सकती, परंतु एक स्वस्थ श्रमिक सडक़ के किनारे भी गहरी नींद ले लेता है। अतः संसार में सबसे जरूरी है स्वस्थ शरीर होना।

व्यायाम नियमित और निश्चित मात्रा में किया जाना चाहिए। प्रायः व्यायाम के लिए प्रातः और सांयकाल का समय उपयुक्त होता है। स्थान ऐसा हो, जहां का वातावरण शुद्ध और खुला हो। बाग–बगीचे, तालाब या नदी किनारे व्यायाम करना और भी लाभदायक होता है। व्यायाम करते समय गहरी श्वासें लें। व्यायाम समाप्त करने पर कुछ देर खुली हवा में टहलना चाहिए। व्यायाम की समाप्ति पर तुरंत कोई खाद्य पदार्थ खाना हितकर नहीं है। नियम समय पर नियमित व्यायाम ही शरीर को स्वस्थ बना सकता है।

व्यायाम मनुष्य के दैनिक जीवन का एक आवश्यक कार्य होना चाहिए। व्यायाम करने से शरीर पुष्ट होता है। शरीर के सभी अंग सुडौल और सुंदर बन जाते हैं। मांसपेशियां ठीक–ठीक स्थानों पर नियमित हो जाती हैं। जठराग्नि तेज हो जाती है जो कुछ भोजन किया जाता है, वह शीघ्र पच जाता है। शरीर में स्फूर्ति आती है। आलस्य दूर भागता है। शरीर में हल्कापन रहता है। किसी प्रकार के रोग का आक्रमण नहीं होता। शरीर के सभी अंग काम करने के लिए सजग रहते हैं। मन हमेशा प्रसन्न रहता है। व्यायाम मनुष्य के लिए उसी प्रकार सुखदायक है जैसे वर्षा ऋतु में छाता पानी रोकता है। व्यायाम रोगों से हमारी रक्षा करता है।

प्रत्येक व्यक्ति को व्यायम करना चाहिए। संसार में आनंद प्रत्येक व्यक्ति चाहता है। आनंद का एकमात्र साधन है स्वास्थ्य का अच्छा रहना। यह स्वास्थ्य तभी ठीक रह सकता है जब नियमित व्यायाम किया जाए। महर्षि चरक का कहना है कि व्यायाम करने वाले पुरुष के शरीर पर बुढ़ापा जल्दी आक्रमण नहीं कर सकता। व्यायाम की महत्ता का बखान करते हुए किसी कवि ने इसके द्वारा प्राप्त होने वाले लाभों के बारे में कहा है–

'स्वास्थ्य आयु बल ओज छवि भूख विविद्रधन काम।
रोग हरन मंगल करन, कीजै नित व्यायाम।।'

सुनीता साहनी
निजी सचिव
निगमित कार्यालय

यदि परिस्थितियों पर आपकी मजबूत पकड़ है तो जहर उगलने वाला भी आपका कुछ नही बिगाड़ सकता।

क्षेत्रीय कार्यालयों/फार्मों पर प्रयुक्त होने वाली मशीनों एवं गोदामों की झलकियां

ज्ञान गंगा

जीत के लिए जरूरी है सही नीति

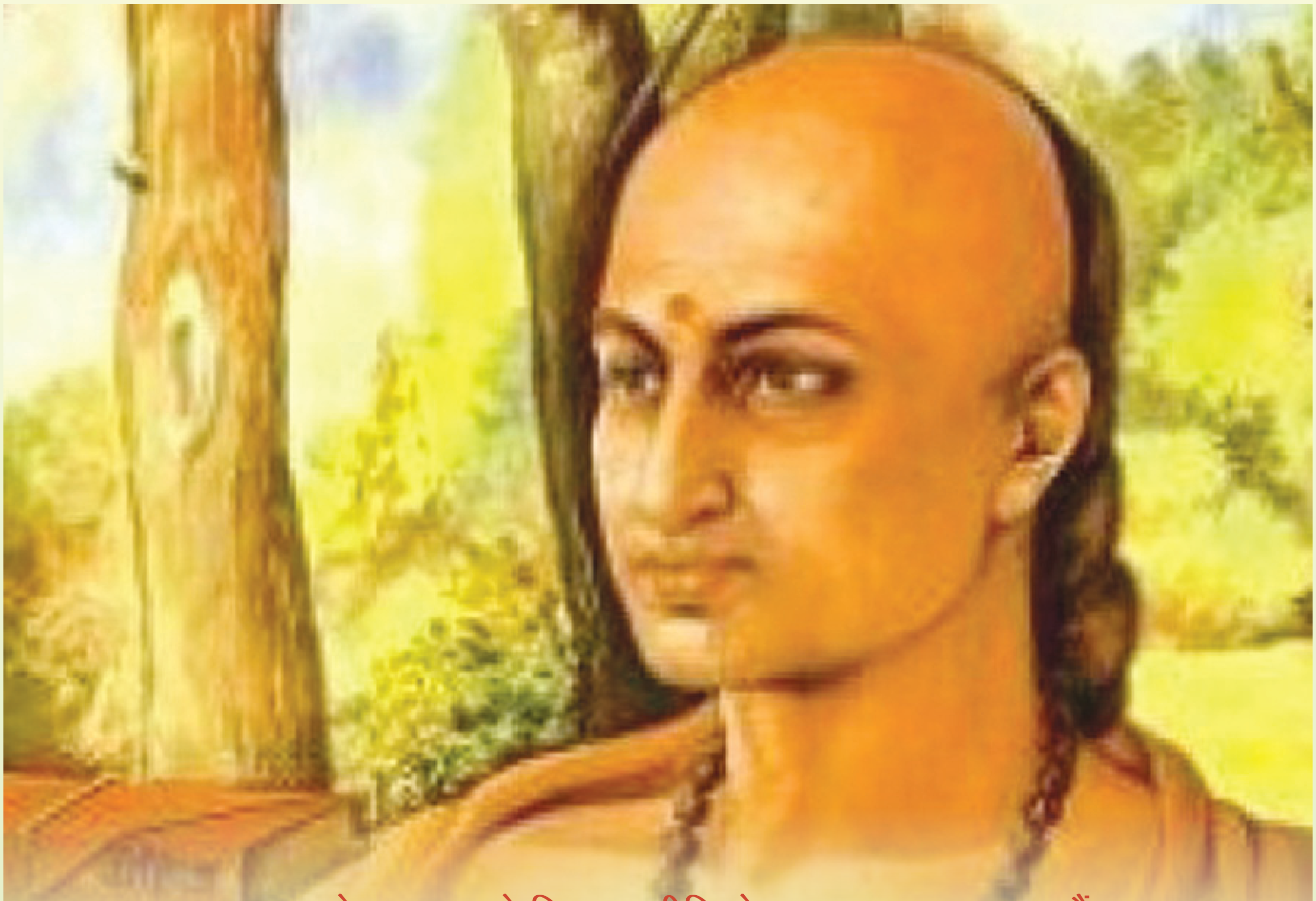

चाणक्य ने सफलता के लिए कूटनीति के चार प्रमुख अस्त्र बताए हैं, जिनका उपयोग समय और परिस्थितियों को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

जीवन में सफलता के लिए सिर्फ कड़ी मेहनत ही आवश्यक नहीं होती बल्कि मनुष्य को देश, काल व परिस्थिति के अनुसार विवाद, विरोध, प्रलोभन और युद्ध जैसी स्थिति के लिए भी तैयार रहना चाहिए। महान कूटनीतिज्ञ आचार्य चाणक्य ने सफलता के लिए कूटनीति के चार प्रमुख अस्त्र बताए हैं, जिनका उपयोग समय और परिस्थितियों को ध्यान में रखकर करना चाहिए। यदि इन चारों को साध लिया गया तो फिर मनुष्य की जीत सुनिश्चित है। ये चार अस्त्र हैं– साम, दाम, दंड और भेद। जब मित्रता दिखाने (साम) की आवश्यकता हो तो आकर्षक उपहार, आतिथ्य, समरसता और संबंध बढ़ाने के प्रयास करने चाहिए। इससे दूसरे पक्ष में विश्वास पैदा होता है। यदि साम से काम न हो तो दाम यानी प्रलोभन का रास्ता अपनाया जा सकता है। यदि कूटनीति का ये अस्त्र भी विफल हो तो दंड का इस्तेमाल उचित है। इसमें ताकत का इस्तेमाल त्याज्य नहीं है। इसी तरह समय की जरूरत होने पर भेद को भी अपनाना चाहिए। इसमें दुश्मन की सेना, गुट या मंडल व अधिकारियों में फूट डालना, उसके करीबी रिश्तेदारों और उच्च पदों पर स्थित लोगों से उसकी ताकत के राज जानना आदि शामिल हैं। जीत के लिए ये अस्त्र अवश्यमेव हैं।

गुणकारी घरेलू औषधियाँ

आयुर्वेदः सेहत के खजाने की कुंजी हैं ये जड़ी बूटियां

आयुर्वेद को सेहत का खजाना कहा जाए तो गलत नहीं होगा। हर जड़ी–बूटी अपने भीतर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के कई गुण समेटे हुए है। वैसे तो आयुर्वेद में लगभग 1,200 औषधीय जड़ी–बूटियों का वर्णन है। लेकिन यहां उन जड़ी बूटियों के बारे में बताया गया है जो आसानी से उपलब्ध हो सकें। इनमें से कई तो ऐसी हैं जिनके पौधे लोग घरों में बड़े शौक से लगाते हैं।

गिलोय (गुडूचि, अमृता)

गिलोय अथवा अमृता अपने नाम से ही अपने गुण को दर्शाती है। यह एक बेल है जिसके तने से रस निकालकर अथवा सत्व बनाकर प्रयोग किया जाता है। यह स्वाद में कड़वी लेकिन त्रिदोषनाशक होती है। इसका प्रयोग वातरक्त (गाउट), आमवात (आर्थराइटिस), त्वचा रोग, प्रमेह, हृदय रोग आदि रोगों में होता है। ये डेंगू हो जाने पर द्ब्रलड प्लेटलेट्स की घटी मात्रा को बहुत जल्दी सामान्य करती है। खून के अत्यधिक बह जाने और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए तो यह रामबाण है।

अश्वगंधा (असगंध)

अश्वगंधा आयुर्वेद में अत्यधिक प्रयुक्त होने वाली औषधि है इसकी जड़ को सुखाकर चूर्ण बनाकर उपयोग में लाया जाता है। इसके चूर्ण के सत्व का सेवन तो और भी ज्यादा असरदायक है। अश्वगंधा चूर्ण बलकारी, शरीर की इम्युनिटी को बढ़ाने वाला, शुक्रवर्धक खोई हुई ऊर्जा को दोबारा देकर लंबी उम्र का वरदान देता है।

शतावरी (शतावर)

शतावरी की बेल की जड़ को सुखाकर चूर्ण के रूप में उपयोग किया जाता है। शतावरी भी रसायन औषधि है यह बौद्धिक विकास, पाचन को सुदृढ़ करने वाली, नेत्र ज्योति को बढ़ाने वाली, उदर गत वायु दोष को ठीक करने वाली, शुक्र बढ़ाने वाली, नव प्रसूता माताओं में स्तनपान" को बढ़ाने वाली औषधि है। शतावरी का सेवन आपको आयुष्मान होने का आशीष देता है।

आंवला (आमलकी)

आंवले के फल को लगभग सभी आयुर्वेद की संहिताओं में रसायन कहा गया है। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, भाव प्रकाश, अष्टांग हृदय सभी शास्त्र आंवले को प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाला मानते हैं। इसके अलावा आंवले को त्वचारोगहर, ज्वरनाशक, रक्तपित्त हर, अतिसार, प्रवाहिका, हृदय रोग आदि में बेहद लाभकारी माना गया है। आंवले का नियमित सेवन लंबी आयु की गारंटी भी देता है।

मुलहठी (यष्टिमधु)

अधिकतर मुलहठी के तने का प्रयोग किया जाता है. यह बलवर्धक, दृष्टिवर्धक, पौरुष शक्ति की वृद्धि करने वाली, वर्ण को आभायुक्त करने वाली, खांसी, स्वरभेद, व्रणरोपण तथा वातरक्त (गाउट) में अत्यंत उपयोगी होती है। इसका उपयोग पेप्टिक अल्सर के इलाज में किया जाता है। एसिडिटी के इलाज में तो यह बेहद कारगर है।

ब्राह्मी

ब्राह्मी देखने में तो सामान्य सी झाड़ी लगती है लेकिन ये बेहद असरकारी है। यह नर्वस सिस्टम के लिए अचूक औषधि है। बच्चों के लिए स्मृति और मेधावर्धक है. मिर्गी में इसका खासतौर पर प्रयोग होता है। मानसिक विकारों के इलाज के लिए तो यह रामबाण है। इसके अलावा इसका उपयोग ज्वर, त्वचा रोगों, प्लीहा संबंधी विकारो में भी होता है।

तुलसी

यह औषधीय पौधा कई घरों में मिल जाएगा तथा सामान्य सर्दी–खांसी से लेकर ज्वर इत्यादि में भी उपयोग किया जाता है। इसकी हर्बल चाय तो विश्व प्रसिद्ध है। यह वातावरण को शुद्ध करती है तथा बैक्टिरियल इन्फेक्शन को झट से खत्म करने वाली होती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना इसका मौलिक गुण है।

घृतकुमारी (कुंवारपाठा)

यह सर्वाधिक पाया जाने वाला छोटा–सा मांसल पत्तियों वाला पौधा है जो कि कई रोगों में अत्यंत उपयोगी है। इसके पत्तों के बीच का गूदा बाह्य उपयोग में त्वचा रोगों में काम आता है। स्त्रियों के मासिक धर्म की अनियमितता को खत्म करने में कारगर है, यकृत (लीवर), तिल्ली (स्पलीन) तथा पाचन संबंधी बीमारियों और आर्थराइटिस के इलाज में इसका खूब प्रयोग होता है।

नीम (निम्ब)

नीम का पेड़ भारत में बेहद उपयोगी माना गया है. इसके सूखे पत्ते लोग कपड़े रखने वाली जगह पर कीटनाशक के रूप में रखते हैं। इसके अतिरिक्त किसी भी तरह के त्वचा रोग में इसके काढ़े और लेप का प्रयोग किया जाता है। स्नान के दौरान इसकी पत्तियों का प्रयोग बेहद लाभकारी होता है।

(बलजिन्द्र सिंह)
वरिष्ठ सहायक (मा.सं)
क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ

हँस-हँस कर लोट-पोट हो जाओगे..

पप्पू जब भी कपड़े धोने
लगता तब बारिश हो जाती
एक दिन धूप निकल आयी तो
पप्पू भागा–भागा सर्फ लेने गया
रास्ते में ही बादल गर्जने लगे
पप्पू आसमान को देखकर बोला–
मैं तो नमकीन लेने जा रहा था।

संता–
कल रात पता नहीं हमारे पड़ोसी को क्या हुआ,
आधी रात को आकर हमारा दरवाजा पीटने लगा।
बंता–
अच्छा फिर आपने क्या किया–???
संता–
क्या करना था मैंने–
मैं भी मस्ती से तबला बजाता रहा।

एक बार पप्पू ने घड़ी बनाने वाले से पूछा," इस घड़ी को ठीक करने का क्या लोगे?"
घड़ीवाला: जितनी कीमत है, उसका आधा दे देना।
अगले दिन जब घड़ीवाले ने पप्पू से जब अपना मेहनताना माँगा तो पप्पू ने उसे दो थप्पड़ मार दिए।
घड़ीवाला: यह क्या किया तुमने?
पप्पू : कुछ नहीं, जब मैंने घड़ी लेने की जिद की थी, तो मेरे पिताजी ने मुझे चार थप्पड़ मारे थे।

जनवरी – जून, 2022 तक सेवानिवृत्तियाँ

क्र. सं.	कार्मिक का नाम (सर्व श्री/श्रीमती)	पदनाम
जनवरी, 2022 में सेवानिवृत्ति		
1	जितेंद्र सिंह	वरिष्ठ ग्रेड– II
2	देवी प्रसाद यादव	माली ग्रेड–I
3	रुडाल	नियमित कामगार ग्रेड–I
4	बलवंत पुत्र श्री बनवारी	नियमित कामगार ग्रेड–I
5	बासु देव पुत्र श्री बैज नाथ	नियमित कामगार ग्रेड–I
6	ओम प्रकाश	पर्यवेक्षक (उत्पादन)
7	लाला राम	कनिष्ठ अभियंता (कृषि, अभियंता) ग्रेड–II
8	सुभाष	नियमित कामगार ग्रेड–I
9	राम अज्ञ पुत्र श्री केदार	नियमित कामगार ग्रेड–III
10	जयप्रकाश	नियमित कामगार ग्रेड–II
11	शिव शंकर	नियमित कामगार ग्रेड–III
12	मुरली	नियमित कामगार ग्रेड–III
13	छोटे सिंह	नियमित कामगार ग्रेड–III
14	चुन्नु	नियमित कामगार ग्रेड–III
फरवरी, 2022 में सेवानिवृत्ति		
15	के राजेंद्रन	वरिष्ठ तकनीशियन ग्रेड–I
16	जी प्रसादम्मा	बहु उद्देशीय परिचर
17	जयबीर पुत्र श्री राम चंदर	नियमित कामगार ग्रेड–I
18	तीरथ राज सिंह	नियमित कामगार ग्रेड–II
19	रहमानी	नियमित कामगार ग्रेड–III
20	बचन सिंह	नियमित कामगार ग्रेड–III
मार्च, 2022 में सेवानिवृत्ति		
21	जी.जे. अल्बर्ट	वरिष्ठ तकनीशियन ग्रेड–III
22	रविंदर के कारागांवकर	सहायक (विपणन) ग्रेड–I
23	दिनेश	नियमित कामगार ग्रेड–I
24	अमर नाथ मिश्रा	नियमित कामगार ग्रेड–I

क्र. सं.	कार्मिक का नाम (सर्व श्री/श्रीमती)	पदनाम
25	तुलसी	नियमित कामगार ग्रेड–I
26	मुक्ति राम पुत्र श्री भुवा नंदी अयोध्या प्रसाद	हेड सिक्योरिटी गार्ड
27	गुरतेज सिंह	नियमित कामगार ग्रेड– III
अप्रैल, 2022 में सेवानिवृत्ति		
28	पीपी आयशा	अपर महाप्रबंधक (उत्पादन)
29	सुभाष	नियमित कामगार ग्रेड–I
30	राकेश	नियमित कामगार ग्रेड–I
31	रामेश्वर पुत्र श्री गोरी शंकर	नियमित कामगार ग्रेड–I
32	पुरखा राम	नियमित कामगार ग्रेड–III
मई, 2022 में सेवानिवृत्ति		
33	नारायण बहादुर	नियमित कामगार ग्रेड–I
34	जी रामचंद्र	बहु उद्देशीय परिचर
35	सोमनाथ शर्मा	सहायक (कृषि) ग्रेड–II
36	जोगेंद्र सिंह	प्रबंधक (उत्पादन)
37	गोपी राम	नियमित कामगार ग्रेड–I
38	घेवर सिंह पुत्र श्री संग सिंह	नियमित कामगार ग्रेड–I
39	स्वरूप चंद्र	नियमित कामगार ग्रेड–I
जून, 2022 में सेवानिवृत्ति		
40	एसके तोमर	सहायक प्रबंधक (उत्पादन)
41	एसएन डेका	बहुउद्देशीय परिचर
42	राम कुमार	नियमित कामगार ग्रेड–I
43	जय सिंह	नियमित कामगार ग्रेड–I
44	नरेश पाली	सहायक अधिकारी (बीज)
45	सुभाष पुत्र श्री भगवान सिंह	नियमित कामगार ग्रेड–II
46	बी.एल. कांवरिया	उत्पादन अधिकारी
47	भोमा राम	नियमित कामगार ग्रेड–III
48	राम किशन	नियमित कामगार ग्रेड–III

प्रशासनिक शब्दावली

1	Abandonment	परित्याग
2	Abbreviated	संक्षिप्त
3	Abbreviation	संक्षिप्त, संक्षिप्त रूप, संक्षेप, संक्षिप्ति
4	Abdicate	पद त्याग देना
5	Abeyance	आस्थगन, प्रास्थगन, स्थगन
6	Abide by	पालन करना
7	Ab initio	आरम्भ से, शुरू से, आदित
8	Ability	योग्यता, क्षमता
9	Able bodied	स्वस्थ
10	Abnormal	असामान्य, असाधारण, अपसामान्य
11	Abolish	उन्मूलन करना
12	Absorption	आमेलन
13	Abstain	प्रविरत रहना
14	Abstract	संक्षिप्त, सार, सारांश
15	Abundance	काफी, बहुतायत
16	Abuse	दुरूपयोग
17	Academic	शैक्षणिक, शैक्षिक, विद्या सम्बन्धी, शास्त्रीय
18	Academy	अकादमी
19	Accede	मान लेना, अधिमिलन
20	Acceleration of disease	रोग का बढ़ जाना
21	Accept	स्वीकार करना, मानना
22	Acceptance	स्वीकृति, प्रतिग्रहण (विधि)
23	Bachelor	कुंवारा, अविवाहित, स्नातक
24	Back dated	पूर्व दिनांकित
25	Background	पृष्ठभूमि
26	Backing	समर्थन, सहारा, पृष्ठपोषण
27	Backlog	ढेर, संचय
28	Backout	मुकर जाना
29	Back reference	पूर्व सन्दर्भ, पिछला हवाला
30	Backward classes	पिछड़ा वर्ग
31	Bad conduct	दुराचरण
32	Bail	जमानत
33	Bail bound	जमानत बंध पत्र, जमानतनामा
34	Bailable offence	जमानती अपराध
35	Balance	शेष, बाकी, संतुलन, बकाया, तुला, तराजू
36	Balanced	संतुलित
37	Balanced budget	संतुलित बजट, संतुलित आय–व्ययक
38	Balance sheet	तुलनपत्र
39	Balance of payment	भुगतान शेष, अदायगी शेष
40	Ballat box	मतपेटी
41	Ban	रोक, पाबंदी, प्रतिबन्ध
42	Bank	बैंक, तट, किनारा, साहूकारी करना
43	Bankrupt	दिवालिया
44	Banking account	बैंक खाता
45	Banking arrangement	बैंकिंग व्यवस्था
46	Banner	बैनर, प्रदर्श पट्ट
47	Cabinet	मंत्रीमंडल
48	Cadre	संवर्ग
49	Calculation	गणना, परिकलन
50	Calender of return	विवरणी रजिस्टर (डायरी)
51	Camp	शिविर, कैम्प
52	Camp at	के दौरे पर
53	Campaign	अभियान
54	Camp accomodation	कैम्प आवास, शिविर आवास
55	Cancel	रद्द करना
56	Cancellation of allotment	आबंटन रद्द करना
57	Canvas	वोट माँगना, पक्ष प्रचार करना
58	Capacity	क्षमता, हैसियत, सामर्थ्य

नेमी टिप्पणियाँ/(ROUTINE NOTES) (1 से 60 तक ...)

1	File in question is placed below-	अपेक्षित फाईल नीचे रखी है।
2	Facilities are not available-	सुविधाएं उपलब्ध नहीं है।
3	File not readily traceable-	मिसिल/फाईल तत्काल नहीं मिल रही है।
4	File these papers-	ये कागज फाईल किए जाएं।
5	Fix a date for the meeting-	बैठक के लिए कोई तारीख नियत/निश्चित की जाए।
6	Follow up action should be taken soon-	अनुवर्ती कार्रवाई शीघ्र की जाए।
7	Further advice may be awaited-	अगली सूचना की प्रतीक्षा की जाएं/करें।
8	Further communication will follow-	आगे फिर लिखा जाएगा।
9	Further orders will follow.	आगे और आदेश भेजे जाऐंगे।
10	Further report is awaited	आगे की रिपोर्ट की प्रतीक्षा है।
11	Give effect to-	कार्यान्वित करें।
12	Give necessary facilities-	आवश्यक सुविधाएं दी जाएं।
13	Give top priority to this work-	इस काम को परम अग्रता दी जाए।

14	Grant in aid	सहायता अनुदान
15	Hand over charge-	कार्यभार सौंपना
16	Henceforth vkxs ls	आगे से
17	His next increment is due on_	उनकी अगली वेतन वृद्धि – को देय है।
18	How can this be done? Can you suggest a way out?.	यह किस प्रकार किया जा सकता है? क्या आप कोई मार्ग सुझा सकते है?
19	I agree	मैं सहमत हूं।
20	I disagree-	मैं सहमत हूं।
21	I do not agree with the above views	मैं ऊपर लिखे विचारों से सहमत नहीं हूं।
22	I fully agree with the office note-	मैं कार्यालय टिप्पणी से पूर्णतया सहमत हूँ।
23	I would like to see_	मैं..... से मिलना चाहूँगा।
24	In conformity with	के अनुरूप
25	In lieu ofds cnys	के बदले
26	Indents for signature please-	मॉग–पत्र हस्ताक्षर के लिए प्रस्तुत है।
27	Inform accordingly	तद्नुसार सूचित करें।
28	Inform all concerned	सर्वसंबंधित को सूचित करें।
29	Instructions have been issued	अनुदेश जारी कर दिए गए हैं।

30	Interim reply may be given	अंतरिम उत्तर भेज दिया जाए।
31	Issue as amended-	यथासंशोधित जारी कीजिए।
32	Issue today-	आज ही जारी करें।
33	A Issue warning to__	..... को चेतावनी दे दें।
34	It is defective-	यह खराब/दोषपूर्ण है।
35	Keep in abeyance-	आस्थगित रखा जाए।
36	Keep pending-	लंबित रखा जाए।
37	Keep this in view	इसे दृष्टि में रखें।
38	Keep with the file	फाईल में रखिए।
39	Keeping in view	का ध्यान में रखते हुए।
40	Kindly accord concurrence-	कृपया सहमति प्रदान करें।
41	Kindly acknowledge receipt-	कृपया पावती भेजें।
42	Kindly check-	कृपया जांच कर लें।
43	Kindly confirm/ consider-	कृपया विचार/पुष्टि करें।
44	Kindly countersign-	कृपया प्रतिहस्ताक्षर करें।
45	Kindly expedite disposal.	कृपया शीघ्र निपटारा करें।
46	Kindly expedite reply-	कृपया शीघ्र उत्तर दें।

47	Kindly instruct further-	कृपया आगे आदेश दें।
48	Kindly look into it-	कृपया इसे देख लें।
49	Kindly reply-	कृपया उत्तर दें।
50	Kindly review the case-	कृपया मामले पर पुनर्विचार करें।
51	Latest by varr%	अंततः
52	Leave on ground of sickness may be granted	बीमारी के आधार पर छुट्‌टी दे दी जाए।
53	Let the status quo be maintained-	पूर्व स्थिति बनी रहने दी जाए।
54	Locate the irregularities/ discrepancies-	अनियमितताओं/ विसंगतियों का पता लगाएँ।
55	Look into the matter	मामले को देखें।
56	Lowest quotations may be accepted-	न्यूनतम दरें स्वीकार कर ली जाएँ।
57	Make interim arrangements-	अंतरिम प्रबंध करें।
58	Make over charge to-	..... कार्यभार सौंप दें।
59	Make use of-	...... का उपयोग करें।
60	Matter has already been considered-	मामले पर पहले ही विचार किया जा चुका है।

राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम 2022–23

क्र.सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1	हिंदी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 100%	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90%	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 55%
		2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100%	2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90%	2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55%
		3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 85%	3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55%	3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55%
		4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' 100%	4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' 100%	4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' 55%
		के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एंव आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6	हिंदी में डिक्टेशन/की–बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10	कम्प्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्वि भाषी रूप से खरीद।	100%	100%	100%
11	वेबसाइट द्विभाषी हो	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)

क्र.सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
12	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)
13	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स/निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14	**राजभाषा संबंधी बैठकें** (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में बैठकें 2 वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
15	कोड, मैनुअल, फॉर्म प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		

हिन्दी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यो/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा – क, ख, ग में परिभाषित किया गया है। तद्नुसार राष्ट्रीय बीज निगम के केन्द्रीय राज्य फार्म एवं क्षेत्रीय कार्यालय निम्नलिखित क्षेत्र में आते हैं:–

भाषा क्षेत्र	केन्द्रीय राज्य फार्म क्षेत्रीय/ार्यालय
'क'	भोपाल, जयपुर, लखनऊ, पटना, हिसार, सूरतगढ, सरदारगढ, जैतसर एवं सुकिन्दा
'ख'	अहमदाबाद, चंडीगढ एवं पुणे
'ग'	बैंगलोर, चैन्नई, कोलकाता, सिकन्दराबाद, रायचूर एवं नालहट्टी

क्षेत्रीय प्रबन्धकों के पतों की सूची

1	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** बी–116–118, स्वागत रेनफोरेस्ट–2, स्वामी नारायण धाम के सामने कोवा हाईवे, कुडासन, गांधीनगर–382421 (गुजरात) कोडः 079 फोन न. 23600302, 8084679202 ई–मेलः ahmedabad@indiaseeds.com
2	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय परिसर, हैब्बल, बैंगलूरु – 560024 (कर्नाटक) फोन न.080–23410159, 23415816, 23416824 ई–मेलः rm.bangalore@indiaseeds.com
3	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** 48–49, सेक्टर–बी, औद्योगिक क्षेत्र, गोविन्दपुरा, भोपाल – 462026 (मध्य प्रदेश) कोडः 0755 फोन न. 2580271 ई–मेलः rm.bhopal/indiaseeds.com
4	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** प्लॉट नं.– 24, इंडस्ट्रियल एरिया फेस–IX, एसएएस नगर, मोहाली –160062 (पंजाब) कोडः 0172 फोन न. 2214388, 2215388 ई–मेलः rm.chandigarh@indiaseeds.com/ nsc.chd.hr@gmail.com
5	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** 22–सी, सिडको (उत्तर) औद्योगिकी क्षेत्र, नजदीक टेलीफोन एक्सचेंज, अम्बाटूर, चैन्नई–600 098 (तमिलनाडू) कोडः 044 फोन न. 26242363 ई–मेलः rm.chennai@indiaseeds.com
6	**राष्ट्रीय बीज निगम लि,** चौमु हाऊस (तबेला) सरदार पटेल मार्ग, सी–स्कीम जयपुर– 302001 (राजस्थान) कोडः 0141 फोन न. 2376760, 2365947 ई–मेलः rm.jaipur@indiaseeds.com
7	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** ब्लॉक ए.क्यू. प्लॉट नं. 12, सेक्टर–V, सॉल्ट लेक सिटी कोलकाता –700 091 (प.बं.) कोडः 033 फोन न. 23671077, 23671074 ई–मेलः rm.kolkata@indiaseeds.com
8	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** लुक्श प्लाजा, चौथी मंजिल, आईएनएस–19,सैक्टर–7 सी, वृंदावन योजना, अमर शहीद पथ, लखनऊ–226012 कोडः 0522 फोन न. 3516971 ई–मेलः rm.lucknow@indiaseeds.com
9	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** शेखपुरा, राजा बाजार, पटना–800014 (बिहार) फोन न. 6287501813 ई–मेलः rm.patna@indiaseeds.com
10	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** 681–690, मार्किट यार्ड, गुलटेकड़ी पुणे–411037 (महाराष्ट्र) कोडः 020 फोन न. 24267059, 24264587, 24266584 ई–मेलः rm.pune@indiaseeds.com
11	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** 17–11, तुकाराम गेट, नार्थ लालगुडा, सिकन्दराबाद–500017 (तेलगांना) कोडः 040 फोन न. 27731152, 27730635 ई–मेलः rm.secunderabad@indiaseeds.com

फार्म प्रमुखों के पतों की सूची

1	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** केन्द्रीय राज्य फार्म, ज्वालागेरा, तालुका : सिंधानूर, जिलाः रायचूर (कर्नाटक) –584143 कोडः 08535 फोन न. 201246/9664297014 ई–मेलः csf.raichur@indiaseeds.com
2	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** केन्द्रीय राज्य फार्म, 10 कि.मी., सिरसा रोड, हिसार – 125001 (हरियाणा) कोडः 01662 फोन न. 275581, 275797 ई–मेलः csf.hisar@indiaseeds.com
3	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** केन्द्रीय राज्य फार्म, सूरतगढ़, जिला – श्रीगंगानगर, राजस्थान–335 804 कोडः 01509 फोन न.220084, 220006, 220309, 221420 ई–मेलः csf.suratgarh@indiaseeds.com
4	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.** केन्द्रीय राज्य फार्म, सरदारगढ़, जिला – श्रीगंगानगर– –335 702 कोडः 01509 फोन न.238296, ई–मेलः csf.sardargarh@indiaseeds.com
5	**राष्ट्रीय बीज निगम लि.,** केन्द्रीय राज्य फार्म, जैतसर, जिला – श्रीगंगानगर, राजस्थान–335 709 कोडः 01498 फोन न. 261202 ई–मेलः csf.jetsar@indiaseeds.com

सब्जियों के उन्नत बीज

क्र.स.	फसल	एन.एस.सी. द्वारा उत्पादित किस्मों के बीज	बुवाई का समय	बीज दर (किलो) प्रति हैक्टर)	पैदावार कु./है. अनुकूल परिस्थितियों में
1.	पालक	ऑल ग्रीन, पूसा भारती	सितम्बर–फरवरी	20–25	125–200
2.	बैंगन	अर्का कुसुमाकर, पूसा परमल, लौंग पूसा क्रान्ति, पूसा उत्तम, पूसा संकर 5.6 एवं 9, संकर मंजरी, संकर हरा अंडाकार तथा लम्बा	जनवरी–फरवरी मई–जून	0.400–0.500 0.15–0.20 (संकर)	200–400 400–700
3.	भिंडी	अर्का अनामिका, वर्षा उपहार, परभनी क्रान्ति, पूसा ए–4	फरवरी–मार्च जून–जुलाई	12–15 8–10 (वर्षा ऋतु में)	90–150
4.	मिर्च	पंत चिली–1, जी–4, एक्स–235, पूसा सदाबहार, संकर–1 से 10	नवम्बर–जनवरी, मई–जून	0.800–1.00 0.200–0.150	85 120–150 (संकर)
5.	टमाटर	पूसा रूबी, पूसा अर्ली डवार्फ, अर्का विकास, पूसा संकर–4 एवं 8, संकर भारती, संकर शिवालिक, संकर चतुर्भुज, संकर वर्षा	नवम्बर–दिसम्बर अगस्त–सितम्बर	0.500 0.120–0.150 (संकर)	250–400 350–400
6.	लोबिया	पूसा कोमल, पूसा सुकोमल अर्का गरिमा	फरवरी–मार्च जून–जुलाई	10–20	80–100
7.	खीरा	पॉइनसेट, ग्रीन लॉग	फरवरी, जून–जुलाई	2.5–3	150–200
8.	खरबूजा	हरा मधु, मधुरस, हाईब्रिड मीठा पंजाब नं.–1	फरवरी–मार्च	2–25 1–1.5 (संकर)	100–200 150–200 (संकर)
9.	तरबूज	शुगर बेबी, ए.वाई, संकर रजनी	फरवरी	4–5 2–2.5 (संकर)	100–150 250–250 (संकर)
10.	लौकी (घिया)	पूसा नवीन, पी. एस.पी.एल. पूसा संदेश, संकर श्रमजीवी, पूसा संकर–3	फरवरी–मार्च जून–जुलाई	4–5 2–2.5 (संकर)	200–300 250–300 (संकर)
11.	टिंडा	अर्का, लुधियाना	फरवरी–मार्च जून–जुलाई	4–5	100–150
12.	करेला	कोयम्बटूर लॉग, प्रीति, बी.जी.–14, अर्का, हरित, पूसा विशेष, संकर सदाबहार, संकर पूर्णिमा	फरवरी–मार्च जून–जुलाई	5–7 1–2 (संकर)	150–200 175–250 (संकर)
13.	तोरी	पूसा सुप्रिया, पूसा चिकनी, पूसा स्नेहा	फरवरी–मार्च जून–जुलाई	4–5	125–150
14.	सीताफल	आमबली, सोना, अर्का चंदन	फरवरी, जून–जुलाई	4–5	400–425
15.	फूलगोभी	पूसा अर्ली, सिंथेटिक, पूसा कार्तिक संकर	जून–जुलाई	0.5–0.65	100–150

मुद्रक: **डॉल्फिन प्रिंटो–ग्राफिक्स**, 1ई/18, चौथी मंजिल, झंडेवालान, दिल्ली–110055,
ई–मेल: dolphinprinto2011@gmail.com

एन एस सी NSC (An ISO 9001 : 14001 Certified Company)

राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम–''मिनी रत्न'' कम्पनी)
CIN : U74899DL1963GOI003913
बीज भवन, पूसा परिसर, नई दिल्ली–110012
दूरभाष : 25846292, 25846295, 25842672, 25842383
ईमेल : nsc@indiaseeds.com वेबसाइट : www.indiaseeds.com